थारू जातिन्क बर्का तिह्वार माघे सक्रान्तीक उपलक्ष्यम थारु भाषा साहित्य प्रति रुची धर्ना व प्रगतीक लाग हरदम प्रयासरत सक्कु गोचलीन हार्दिक मंगलमय शुभकामना ब्यक्त करती।

गोचाली परिवार

मुद्रक : श्यामा प्रिन्टर्स प्रा० लि०
घरवारीटोल-२, नेपालगंज

थारुनक लाग असली खुराक

गोचाली

२०५४

थारू भाषक् जेष्ठ पत्रिका

थारूनक बर्का तिहवार माघ सक्रान्तीक सुखद उपलक्ष्यमा हमार सक्कु ग्राहक महानुभाव हुक्नक उतोर-उत्तोर प्रगतिक लाग हार्दिक शुभमामना ब्यक्त करती।

हिकोला कलर ल्याब

धम्बोझी, नेपालगन्ज

फोन नं. २०१७१,२१३७४

यहाँ बर सुग्घरक रंगीन फोटो धुलाई छपाई के साथ-साथ फोटोग्राफी सम्बन्धी सक्कु मेरक सुविधा देजाइत, । सेवा कर्ना मौका अवश्य दिहक परल।

गोचाली

वर्ष २६ अंक ११

२०५४

ब्यवस्थापक व प्रकाशक

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मन्च (नेपाल)
गोचाली परिवार २०२८

सहयोग रु. २०/-

थारूनक बरक तिहवार माघ संक्रान्तीक सुखद उपलक्ष्यमा हमार सक्कु ग्राहक महानुभाव हुकनक उत्तर-उत्तर प्रगतीक लाग हार्दिक शुभ कामना व्यक्त करती ।

प्रो. टिकाराम चौधरी

ज्योती फोटो स्टूडियो

बाँसगढ़ी ,बर्दिया

यहां रंगिन तथा सादा फोटो खिचाई धुलाई कैजाइथ

यहां हर प्रकारक सुन चाँदीक गहना उचित मुल्यम मिल्थ सम्झखुइ ' नेपाल ज्वैलर्स ' सदरलाइन नेपालगंज वार्ड नं.४।

★

नं. १ सुन व चाँदीक ग्यारेण्टी समेत सुन्दर व आकर्षक गहना निर्माता एवम् विक्रेता ।

फोन नं. - २१६११

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मन्च (नेपाल) गोचाली परिवार २०२८

केन्द्रिय समिति

अध्यक्ष :- श्री महेश चौधरी, दाङ्ग
उपाध्यक्ष :- श्री सगुन लाल चौधरी, बर्दिया
महासचिव :- श्री जग्गु प्रसाद चौधरी, बर्दिया
सचिव :- श्री कृष्ण कुमार चौधरी बर्दिया
कोषाध्यक्ष :- श्री जितबहादुर चौधरी, बाँके
सदस्य :- श्री भगवती प्रसाद चौधरी दाङ्ग देउखरी
सदस्य :- श्री मगल प्रसाद, चौधरी दाङ्ग
सदस्य :- श्री मान वहादुर चौधरी, सुर्खेत
सदस्य :- श्री कृष्ण बहादुर चौधरी, सुर्खेत
सदस्य :- श्री भिम बहादुर चौधरी, बर्दिया
सदस्य :- श्री रूपलाल चौधरी, बर्दिया

सल्लाहकार समिति

१. श्री अशोक चौधरी, दाङ्ग (किसान नेता व बुद्धिजिवी)
२. श्री कैया चौधरी, कैलाली (राष्ट्रिय सभा सदस्य)
३. श्री टिका राम चौधरी, बर्दिया (समाजसेवी)
४. श्री कृष्ण बहादुर चौधरी, बर्दिया (पूर्व अध्यक्ष गोचाली परिवार
५. श्रीमती जगमोहनी चौधरी, बर्दिया (अध्यक्ष बेस महिला जागरण केन्द्रिय समिति
६. श्रीमली शान्ती देवी चौधरी, दाङ्ग (अध्यक्ष, ग्रामीण महिला विकास संस्था)
७. डा० द्रोण प्रसाद रजौरिया, दाङ्ग [थारू विज्ञ]

जिल्ला तदर्थ समिति

दाङ्ग | बांके | बर्दिया | सुर्खेत | कैलाली | कन्चनपुर

सम्पादक परिवार

प्रधान सम्पादक :- श्री सगुन लाल चौधरी
सम्पादक : श्री जग्गु प्रसाद चौधरी
" :– श्री जित बहांदुर चौधरी
" :- श्री कृष्ण कुमार चौधरी
विशेष सहयोगी :- शिव कुमार चौधरी

सम्पादकीय

चुक अंराइल जसिन थंधारमन सलाई डिब्बी छम्ती, दिया हत्लैंति अजरार फुकक् लाग नेग्ती, सलबलइती धिर धिर सक्कु जहन जगैंती गोचाली भिरती समयक प्रवाह संग आग बह्ती बा लक्ष्य वउद्देश्य प्राप्त करक लाग। मुर्गा ब्वालल, ध्यार मुर्गा बोल्ती जाईत । आँकुर जग्ती बाट तर भकोइल वाट दिया धिर – धिर फुकती जाईत काकरकी सक्कु जन अजरार हुइपर्या कना महसुस र्कति बाट यस्तक विहान हुइना संकेत मुर्गी देती बात सक्कु जन जाग चुकल बाट आपन आपन काम कर्तव्य मन दँत चुकल बाट। सुयंक लाली किरण बिहानीके सुन्दर मुस्कान देहक लाग रातसे संघर्ष कर्ती बा सायद टेलवा, टेम्री, जोग्नीं, टेंस, थारु मुक्ति, मुक्तिक डगर, कविला बिहान हमार पहुरा, थारू संस्कृती नेवता जसिन आकुर गोचालीनक सहयोग महशुस कर्ती बाट। हम्र बलगर बन्ती जाई गोचली ध्यार बनैंती जाई सुयंक लाली किरण रातभरिक संघर्ष मन जित्लक सुमधुर मुस्कान लेक सक्कुन से गोचाली भिर अवश्य फे अइने बा।

गोचाली हुक्र, गोचाली आपन ध्यारनक कठिनाई व समस्या क कारण से ०५२ व ०५३ सालम प्रकाशन हुई नै स्याकल याकर लाग हम्र एकदमै दुखित बाटी अप्न हुकन क हर मेरक सहयोग मिल्नी रलसे गोचाली हन निरन्तर रूपमन जिबित राख़ सेकजाई कना विश्वास करती यि अङ्क प्रकाशन करबेर सहयोग कर्ना तमाम गोचालीन प्रति हम्र आभारी बाटी।

जय गोचाली परिवार !

बिषय सूची

१-	गोचालीक आहवान (कविता)	–सगुनलाल चौधरी
२-	अभागी पहुना (बत्कोही)	–जित बहादुर चौधरी
३-	उ असिक बाँचता (कबिता)	–अशोक चौधरी
४-	जब जनजातिनक दोहलो काहजाइत(लेख़)	–महेश चौधरी
५-	युवक हुकन सन्देश (गित)	–कविराम थारु
६-	आत्म सम्मान (लेख)	–कृष्ण कुमार चौधरी
७-	गोचालीन म्वार आहवान (कविता)	–शुशिल चौधरी
८-	उ फेर आइतीं बा (बत्कोही)	–बिष्णु प्रसाद चौधरी
९-	हमार दशा (कबिता)	–लक्ष्मण चौधरी
१०-	गोचालीह यि सन्देश (कविता)	–राम लौटन चौधरी
११-	किसानके व्यथा (कविता)	–भगवती चौधरी
१२-	थारु जाति हुकन हेनाँ एक दृष्टिकोण(लेख़)	–भगवती प्रसाद चौधरी
१३-	ग्वाबर के काह्नी ? (गित)	मंङ्गल प्रसाद चौधरी
१४-	पापी मनै के हो ? कथा	–राम कुमार चौधरी
१५-	नँ थाहा पइल हुइबी कंलसे	–सं. सागर चौधरी
१६-	एकता के अहवान	–गरिबु चौधरी
१७-	मनक बेदना नुकल बा	–जीत ब० भगो-या थारू
१८-	धुमरू	–जगत राम थारु
१९-	'रूपक' प्रेम प्रतिज्ञा	-जग्गु प्रसाद चौधरी

"गोचालिक आहवान"

ले. सगुनलाल चौधरी
सेमरहवा, बर्दिया

संगठन ! संगठन !! मुख्य शक्ति संगठन !!!
थारू भाषी मित्रहो बनाई एक संगठन ।

थारू राजा दंगीशरण बुद्धके सन्तान
दंगी राजा "दंग" तका पुरान हौ निसान
भित्री, तराइ, भावर भूमि योह हमार स्थान
मातृ भाषक करी उत्थान यी हो हमार आहवान (१)
संगठन .... ।
थारू .... ।

थारु भाषा संस्कृतिक बाटी हम्र धनी,
मातृ भाषा रति-रति नक्कल करनाँ बानी,
पढल लिखल विद्वान हुँकु समाजके ज्ञानी
आपन लडकन पट्टू बनाके रटैथ डेडी मम्मी (२)
संगठन .... ।
थारू .... ।

विश्वरूपी घरक नेपाल छोटी कोष्ठी
समाजरुपी लेंहराम थारु हमार पण्ठी
पिछरल जाती जनजातीम थारु फेत पर्थी
थारु भाषा पुरुष पच्छिउँ रेडियोम सुन्थी
संगठन .... ।
थारु .... ।

भाषा प्रेमी साहित्यकार व समाज सेबी गोची
भाषिक एकता लग्ना काम सक्कु जन [सोची

अध्ययन, मनन, चिन्तन कैक समाजह जाँची,
लिखना, छपना, बँटना करी साहित्य हमार बाँची। (४)
संगठन .... ।
थारु .... ।

२०२८ सालम "गोंचाली" छपल जेठो नाउँ परल
थारू भाषक खोजी कर्ल डा० गणेश खराल
मेची से महाकाली सम्म डा० भ्रमण कर्ल
थारू जातीक भाषा लिपि ध्यार जम्मा कर्ल। (५)
सगठन .... ।
थारू .... ।

मातृ भूमि नेपालक हमार थारू भाषा
युवा हुँक्र उच्थान करही यी हमार आशा
साहित्य रुपी ऐनाके पोंछ - पाँछ करी शिशा
असिन झल - झल पारी जैस छैला छैलिक बत्तीसा। (६)
संगठन! संगठन!! मुख्य शक्ति संगठन!!!
थारु भाषी मित्रहो बनाई एक सगठन।

अभागी पहुना

ले. जीत बहादुर चौधरी
बैजापुर गा.वि स. ३ कुम्भर (बाँके)

एक देशम एक्थो बुढवा व बुढियक परिवार रलह बुढवक स्वभाव सदद सदद पहुना घर अइलसे बडे मज्जा लग्ना व हुकनसे सुख दुःख बात बतोइना रलहिस् कलसे बुढियक स्वभाव जुन ठीक बुढवक उलता रलहिस। ऊ बुढिया पहुना हुकन एक्को द्याख नै स्याक

बुढिया आपन मन-मन कह यी ;, पहुंना सद्द दद्द का घिच्च अइथ पहुंना देखक जातसे म्वार जीउ अघा रइल। बुढवा जुन वाकर घरम कभु-कभु पहुना नै अइलसे ऊ यीहँर उहँर गाउँ घरम पहुना ख्वाज जा जाय "कब अइवे पहुना कह ब वही पहुना घरम नै अइलसे बडे ख्वाँर लागस।

एक दिन संझ्या हो स्याकल रह। पहुना कहाँरे से नै अइलस् आब उ बुढबा डगरी ओर कहाँरे से पहुना आइत कि नाही कैक हयार जाइत रह। ठीकसे जिलरेक भागमे सिकहर टुड कना जसिन एक्थो मनैया आपन घर कब्ब पुगम् कैके खुब जोरसे तन्याक तुनुक नेंगती जाइत रह। उ बुढवा डगरीथ नेगइया मनैया बोलाइल् " ए! हजुर कहाँ जइती उपन? आइना आज हमार घर जाई, आज हमार घर अजरार बना देबी त का हुइजे, सांझ फे हो स्याकल बा। कना दुर घर बाट रात हो जाई। आज त्याका जीन जाई। आज हमार घर गफ-सफ कर्गी। खाना पीना खैबी, रात भर रहबी काल बिहान आपन घर चल जैबी।" उ मनैया बुढवकघर ओर प्रस्थान करल। बुढवा व उ जब घर पुग्ल त बुढवा आपन बुढिया हन कहल-" पहुना आइल री। बैठना बैठना देब व खानापीना हेरो। आज रात भर पहुना से बात चीत बतोइबी। खानपीन खैबी काल बिहान हुइत पठादेबी।"

बुढिया त ठीक बुढबक उलटा रह ऊ पहुनन् द्याख नै सेक्ना रह वही भिन्न-भिन्न झनकक रीस लागन रलहिस्। जब बुढवा खानापीना के नाउँ उठाइल त बुढिया कहल-" चाउर बाउर नै हो का रीझा देना हो। सदद् सदद् पहुना लर्नहिस"

जब बुढिया चाउर नै हो कहल त बुढवा कहल " चाउर नै हो त का धान फे नै हो? जा देहरीमसे झिक्क कुट व खीर भात बना। मैं जैइतुँ भैंसिनियक दूध दुइ।" बुढवा उहुंर भैंसिनियक दूध दुह गैल त दुढिया यहोंर धान झिक्क ढैकी कुट लागल! एक दुइ चो टक-यांङ, टक-यॉङ

पाग्ल व खुइस्स ---- ---- कर व धनी धनी कह – '' यीह मार बुढवा कसिन हुइतस् कसिम छिः । 'यी हमार बुढवा कसिन हुइतस् कसिन छिः ।'

पहुना जब बुढिया हन अखिक बरबराइल त सुनल त सोच लागल । " बुढवक बात व बुढियक बातके बात का रहस्य बाट जे ? पाहुना बुढिया हन पुछल – " काकर असिन कहतों बुढिया बुढवक विचम का बात हो जे ?

बुढिया कहल – " हमार बुढवक का बात बतइबो ? ईही जुन पहुनहन खुब मज्जासे खान पीन खुवैके पियैथ जब रातक सुतथ तब आ-धारात हुइथत ईह । ढेंकिक ध-यार-२ मुसरालेक पहुन मार लाग्थ । असिन त बाट हमार बुढवा ।

जब पाहुना हन बुढिया असिन बात सुनाइल त पहुना बुढिया से कहल – " मै त यीहां नै रहम म-बा पाइल से बेन भाग जैन "कहल व सुईकुत्रा ठत्राकल । ईहोर बुढवा भैसिनियक दूत्र दुइक अइत त पहुन ईहोर उहोर हयारल पहुननै धाखल त आपन बुढिया पुछल - " पहुना कहाँ गैल री ?

बुढिया कहल– " ओसिन पहुना फे बलैन।" बुढवा आपन जन्नी-हन पुछल " ऊ पहुनाका कल जे ? बुढिया जवाफ दिहल यीं" ढेंकिक मुसरा खोलो, मही हेर्नास् लागल बा, कसिन रहथ ढेंकिक मुसरा ? मै कनु मैं धान कुटतुँ । धान कुटक सेक लिउँ त हेरहो । आखिर रात भर त रहना वाँ । पहुना कहल– " आब्बेहे हयार देव महीं । नैदेबो कलसे मै ईहाँ से भाग जैंम कहल व भाग गैल । ;,

बुढवा कहल– " हुंकाहार देशमा असिन मुसरा नै हुइहिन तब त हयारक लाग मगल नै त काकर मग्त । ऊ बुढवा ढेंकिक मुसरा उखारक देखाइकलाग दौरती गैल । " ए ! पहुना रहो! रहो! मुसरा हेरो-२ ! कैक बडे जोरसे चिल्लाइल । उलितक पहुना पाछ और हयारल त धाखल बुढबा मुसरा लेल दौरत । पहुना स्वाचल कि फुरसे " रातक यी बुढवा मारी कैंक बुढिया कहल रह । नाकती कि आब्बहे मार आगैल ऊ पहुना झन

बेपत्ता पूँछ उँखार भागल । लेकिन यी सब बुढ़ियक जाल रलहिस का-कर कि ऊ पाहुना हन कौंन उपाय लगाक भगैना हो कैंक स्वांचल रह ।

पहुना जाइत जाइत एकथो बडेभारी बिच बनवम पुगल । बनबम एवथो गोठवा रह ऊ गोठवाम एकथौं लौंड़ा ब वाकर बाबाकेल रलह । लौंडक बाबा बनवम बर्दा खबाज गैल रह ऊ पहुना लौंडहन कहल– ' भैया यीहां बैंठना बास मिली कि नाही? " तब लौंडा कहल " का हुई नै मिनी आज ईहाँ बैठी कान चल जैवी " आव पहुना गोठवम बैंठल । लौंडक बाबा दुरसे आपन छावहन हांक पारल । " रे बर्का छावा! पहुना आइल कि नाहीं रैं "?

तब छावा बोलल्–आरहल आरहल तै पहुना हन करसि हरक्क बांधस मै जाइतुँ मुँग्रा लिह । " यी बात जब पहुना सुनल तब पहुना स्वांचल "ओहो! हिक्र छावा बावा त मही पकना फे मारक लाग बाट "

ऊ पहुना बेपता उहाँसे भागल ।

याद रखवी किन्क लालल बर्दा हुइलक ओर्स ऊ बर्दा एकदम भाग भाग आपन घर गैलक ओर्से वाकर नाउँ पहुना रलहिस । एक्थो बर्दा बडे बडे पिह हुइलक ओस वाकर नाउँ मुँग्रा रलहिस् ।

पहुना जाइत जाइत एक्थो दोसर गाउम पुगल त एक्थो घरम बास मागल । उ घारम एकथो बुढियाकेल रह । पहुना बुढिया कहल- " यीहाँ बास मिलि कि नाही? " बुढिहा कहल – " यीहाँ गाँस मिलि बास नै मिली । " अत्रा कहल व एक माना चाउर लान्क पहुनक रूमा-लिम खान्हया दिहल पहुन उहाँसे पठा दिहल ।

पहुना फ़ेन आपन डगर लागल । जाइत जाइत एक्थो दोसर गाउंमा पुगल । ऊ एक्थो घरमा गैंल । उ घरमा फे पहिलक घरक जसिन एक्थों बुढवा व बुढिया रहल । ऊ पहुना घरम जाक बास मागल । धरम बुढिया केल रह । बूढवा कहोरे काम कर गैल रह । पहुना

कहल म्वारथे चाउर पलबा । मैं कहाँ सम बोकल रहम । यीह चाउर रिझा देव बुढिया भात रिझाए लागल । बुढवा काम कैंक आइल त आपन जन्नीहन कहल – " री! बेश्या पानी आनत! वाकर जन्नी पानी दिहलिस ।

पाछफे बुढवा कहल– " री ! बेश्या माखुर चढात! वाकर जन्नी खुरू-खुरू माखुर चढाक आपन ठ-व ह दिहल ।

अस्तक आपन जन्नी से ज्या–ज्या मागल सव बातम बेश्या कैंक नैं छोड । बुढवक बानी आपन जन्नी हन हर बातम बेश्या कना रलहिस् । वाकर जन्नी एकफो फे रीस नैं मान्क आपन ढ-वक बात खुरू-खुरू मान ।

पहुनक मनम अइलिस कि याकर नाउँ त" बेश्या हुइंहिस कैंक आब पहुना फे कहल " बेश्या भात रिझल कि नाँहीं ?

जब बुढिया पहुनक बेश्याकना शब्द सुनल त ऊ बडे जोरसे रिसाइल व कहल " दहिजरा ! मैं का त्वार जन्नी हुइनुँ ? म्वार बुढ़वा पो कथ का तैं कह पैंड्या? काकर महीं बेश्या कल्या ? अब्ब यीह करछुल कप्पारिम जटक देबुँ आपन रुमाल दोस् । ल्या अपन भात लंजा । बुढिया रिझती भात पहुनक रुमालिम खन्गा दिहल बिचारा पहुना आखिरम कौंनो ठाउँम बैठना बास फे नैं पाइल ना त भात खाइक पाइल । भूखल प्याट अपन घर पुगल ।

यी कथा (वतकोही) से'क शिक्षा पैंली त ? हमार गरीबन के दिन फे उह अभार्गा पहुना जसिन बा । अड्ड़ा अदालतमा जैंब्रोत फे हमार बात कुई नैं सुन्देथ । जिम्दरुवन फे नैं मज्ञा मन्थ । हमार देश नेपालय आज सम्म अनेक परिर्वतन हुइल व अनेक दलके सरकार गठन हो स्याकल लेकिन गरीबनक अवस्था उह आभगी पहुनक जसिन वस्तक वस्तक पल वा । तसथैं गरीबन के मुक्तिक लाग सम्पूर्ण शोषित पिडित जनता हुँकन एक जुट होक संघर्ष कर पर्ना जरुरी बा ।

★ ऊ असिक बाँचता ★

ले– अशोक चौधरी
कर्जाहीं, दाङ्ग

पुषके आधा बित रहल ....
रातके तेश्रा पहर वितल नैं हो
सारा दुनिया मस्त निदम हेराइल वा
पूरा गाउँ अँधार रातम स्वाम्म कल वा
कहुँ अन्त कुकुरके भू भू आवाज फे नैं हो।
मानौं,
सारा संसार सद्दक सद्दक लाग निर्दैनने बा
आव रातके रात पल रही
कब्भु दिन नैं उँठी
जुग जुग सम
चकमन्न सन्नाटा
छाइल रही- छाइल रही।

असिन्म
आपन आग पर्ना खोभ्रिम
दिया धरके
पैंरा बा घाँस खन्द्रना
उ गर्सले
सानी खन्प्रना कोठाम
लगातार ध्याप ध्याप

नैं हुइस निद सुत्नाम
नैं हुइस भूंख खैंनाम
रथिस सोंचाई हर वेला
साहुक ऋण तिर्नाम ।
माघ व बाघ हो कना
जन्लवा बा ऊ,
खोज्नी बोज्नीक वात

सोंचल बा ऊ

खा ने खाक चल्ल बा ऊ
पुखनके ऋण चुक्ता कर्ना
जीन्दगी ह दाउ लगैला ऊ
आपन धर्म कर्म नै भूल्ल हो ऊ

दुलही अन्लक दुई महीना नै हुइस पुगल
छरिद्द ज्यानसे ज्यादा बोझ बातिस् थपल
मलिकवा धरथ नै धरथ कौनो ठेंकान नै हो
सौकी कत्तामे कत्ता निकारथ कौनो किटान नै हो ।

खोज्नी बोज्नीम मलिकवा
दोब्बर सौंकी देखाइल
का कर विचार सुनके
हैरान हो गैल ।
कुछ साहस नै हुइस
अन्यायके विरोध कर्ना
चुप चाप सह लिह्ल
फुटल कर्म ह धिकर्तौं ।
अन्याय व शोषणके
कठघराम फँसल बा ऊ
दलालके जालम
लट्पटाके बाझल ऊ
सामन्तक पञ्जाम
सिमोटके गुटमुटाइल बा ऊ
फटहक चालम
परके चुसलवा ऊ चुसल बा ऊ
वर्षक खेतीक काम
ओराइ कति कति
बाकर जन्नी मुलिस
बियार लगैती लगैती
बेहोस हुइल बड्लङ्ग
हिलम गिरके
जन्नी मुलक हुइल

हाँथ ग्वार सरके
संसार अँधार हुइल
नै हुइस आग पाछ
सिरिफ अकल्ह हुइल
आब कसिक ऊ बाँच ।

जब जनजातिक दोहलो काह जाइथ

(महेश चौधरी सांसद)

हमार देश नेपाल संसारक छोटी मुलुकमध्य एक हुइलसे फे यी एक्थो छोटी संसार फे हो, काकर कि यीहाँ प्राय सब जातिक मनै जस्त मंगोल, आर्य, द्रभिड आदि नश्लक मनै हुकनक बसोबास बाँ ; यी मुलुक अनेक जाति तथा जनजातिनक संगम स्थल हुइलक ओर्से यीहाँ जातीय, भाषिक, धार्मिक व सांस्कृतिक विविधता रहल बा ,

सबत २०४८ सालक जनगणना अनुसार नेपाली भाषी अधिराज्यक कुल जसख्या मध्ये ५०.३९%मैथीली ११.८५%भोजपुरी ७.४६% थारू ५.३७%, तामाङ्ग ४.८६%, नेवारी ३.७३'/., अवधी २'/., मगर २.३२'/. हिन्दी ०.९२'/ अंग्रेजी ०.०१'/. व अन्य ८.७७'/. बाट ।

श्री ५ पृथ्वीनारायण शाह देशके एकिकरण कर्लक पश्चात जनजतिनक भाषिक व धार्मिक दमन प्रारम्भ हुइलक हो । चाहे ऊ राणाकालम हवाए वा पञ्चायती काल नेपाली भाषाकेल राजकीय मान्यतापैती आइल बाट ।

पञ्चायती कालम एक्क भाषा एक्क भेष कना नारा घन्का गैल । राणाकालस त झन नेपाली भाषा बाहेक अन्य भाषहन लेख्पढ कर्ना व

प्रकाशन कर्नासमेत प्रतिबन्ध लगागैल। विगतके दिनम हुंइलक भाषिक दमनके कारण अन्य रष्ट्रिय भाषाहुँकन आजसम अल्पविकसित अवस्थासै गुज्र पर्लक यीहाँ आपन विवशता बा।

नेपाल अधिराज्य संविधान २०४७ क धारा ६ से देवनागरी लिपिम नेपाली भाषा नेपलके राष्ट्र भाषा हो। नेपाली भाषा सरकारी कामकाजक भाषा हुइने बाट। नेपालके विभिन्न भागम मातृभाषक रूपम बोलना सक्कु भाँषाहुक्र नेपालक राष्ट्रिय भाषा हुइत कहक स्पष्टसाथ उल्लेख कैगैल बाट। नेपाली राष्ट्र भाषा वाहेक अन्य राष्ट्रिय भाषक विकाशके अवस्था ह्यर्र वेर नेपाल भाषा (नेवारी) सबसे विकसित अवस्थाम वा। यीं भाषम उच्चशिक्षा हासिल कर्नाथेसे लेक आज विद्यावारिधीक उपाधीसमेत हासिल कर सेक्ना व्यवस्था बा। मैथिली भोजपुरी, लिम्बु, उर्दू भाषक विकास हाल देशम नै हुइलसे फे मैथिली भाषक अध्ययन अध्यापन भारतके पटनाम स्नातकोत्तर सम्म व भारत के दार्जिलिङ्ग व सिक्किम लिम्बु भाषम उच्चशिक्षा प्रदान कैजेती बा। नेपाल अधिराज्यक सविधान धारा १८ से नेपाल अधिराज्यम बसोबास कर्ना प्रत्येक समुदायहुन आपन भाषालिपि व संस्कृतिक संरक्षण तथा सम्वर्धन कर्ना अधिकार प्रदान कैगैल बा। प्रत्येक समुदायहुन आपन बालबालिका हुकन प्राथमिक तहसम्म आपन मातृभाषम शिक्षा देना किसिमसे बिद्यालय सञ्चालन कर सेक्ना स्वतन्त्रता प्रदान कैगैल बा। तर संविधानक आशय अन्य राष्ट्रिय भाषम प्राथमिक तहसे उँप्परक शिक्षा हासिल कर नै सेकजाई कर्ना कदापी नै हो,

यदि अन्य राष्ट्रिय भाषक छात्र-छात्राहुँक्र कौनो विद्यालयम ऐच्छिक विषयक रूपम आपन मातृ भाषम शिक्षा हासिल कर्ना माग कर्लं कलसे हुँक्र आपन मातृभाषम शिक्षा हासिल कर पैंना कि नि पैंना? सरकार वाकर नैसर्गिक अधिकार प्रदान कर्ना कि नै कर्ना? नेपाल भाषक (नेवारी) विद्यार्थी हुक्र उच्च शिक्षा थेसे लेक विद्यावारिधीसम आपन मातृ भाषम हासिल कर पैंथ कलसे अन्य राष्ट्रिय भाषक विद्यार्थीहुक्र ऊ अवसर काकर नै पैंना? अन्य राष्ट्रिय भाषम प्राथमिक

तहसे उँप्पर अध्ययन, अध्यापन कर्ना अधिकार नै हो कहके सरकार जहिया फे निप्च ख्वाजथ। संभिधान त जातिय समानता व भाषिक समानतक बात बतोईल बा। सरकारक अन्य भाषा हुंकन प्रति कर्ना पक्षपातपूर्ण व्यवहारसे का नेपालीक जनजातिक मौलिक हकके सुरक्ष हुईसेकी? सरकारक असिन पक्षपातपूर्ण व्यवहारसे का समानता कायम हुइलक मान सेकजाई?

नेपाली राष्ट्रभाषावाहेक अन्य राष्ट्रिय भाषक विकास कर्ना अभिभारा ऊ समुकयककेल कदापि नै हो, सरकारक फे प्रमुख दायित्व हो। कौनो फे भाषक विकासक लाग राज्यका कसिन वातावरण व सहुलियत प्रदान करथ, भाषा विकास वाकरम निर्भर हुइना बात हो। आजसम राज्य अन्य राष्ट्रिय भाषक विकासक लाग कत्रा राज्यस्वव्यय कर्ले बा ऊ आधारम समानतक बात कर्ना सजिलो हुई।

अन्य राष्ट्रिय भाषक विकासक सम्बन्धम राज्से अवलम्बम कर्ना नीति बारे संविधानक धारा २६(२) म स्पष्टसाथ उल्लेख कैगैल बा "विभिन्न धर्म जात जाति सम्प्रदाय व भाषा भाषिक हुकन्क बिच स्वस्थ एवं सुमधुर सामाजिक सम्बन्ध विकसित कैक सक्कुनक भाषा, साहित्य लिपि कला व संस्कृतिक विकाससे देशक सांस्कृतिक बिविधता कायम कैक एकताहुन सुदृढ कर्ना नीति राज्य अबलम्बन कर्ने बा। यीहा प्रश्न उठ स्याकथकि आजसम राष्ट्रिय भाषक विकासके लाग सरकारका कत्रा प्रयास कर्ल बा? राष्ट्रिय भाषक विकाशक लाग शब्दकोष पाठ्य पुस्तक व्यकरण निर्माणओर सरकार पैला चलैल बा कि नै हो? आजसम यीहुरओर सरकारके प्रयास प्रायः शून्य जसिन देख परथ। राज्यक असिन पक्षपातपूर्ण व्यवहारसे का यी मुलुकम स्थायीरुपम राष्ट्रिय एकता कायम हुइसेकी? सक्कु जहनके लाग यी मननयोग्य बात हो। जनजातिक कौनो विद्यार्थीहुन नेपाली भाषक कबि लेखक बन्ना कठिन (मुस्किल) पर स्याकथ तर वहीहुन आवश्यक अवसर प्रदान कर्ना हो कलसे वहीहुन आपन मातृ भाषम ग्रन्थ लिख्ना सजिलो हुइ सेकी। रबि-

न्द्रनाथ टैगोर बङ्गाली भाषम आपन कीर्ति लिखके विश्वम ख्याती प्राप्त करसेक्थ कलसे नेपालके जनजाति हुक्र फे आपन मातृ भाषम आपन अमूल्य कीर्ति कोरक ख्याति प्राप्त विद्वान बन नैं सेकही कैंक कसिक ठोकुवा कर्ना ?

आज जनजाति महासंघ देशम एक्थो राष्ट्रिय भाषम विश्वविद्यलय स्थापनके माग कतिंबा व सरकारसे आग्रह कति बा कि ऊ मुलुकमा सर्व प्रथम राष्ट्रिय भाषक विद्यालय सञ्चालन करक लाग अनुकूल वातारण सृजना कर व सरकारक दृष्टि उहँरओर आकर्षित हुई नैं स्याकथो बहुसंख्यक रूपम रलक जनजातिनक भावनाहन लत्याक यदि सरकार मुलुकम मुट्ठी भर पण्डितनके छाइ-छावाहुकन भत्ता खवैंना किसिमसे संस्कृत बिश्वविद्यालय सञ्चालन करथ कलसे वहीहन सामाजिक न्याय कदापि मान नैंसकेजाइ कहके जनजातिक हुक्र कहती बाट। विकेन्द्रीकरणके अवधारणा कलक स्वायत शासन अथवा राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक स्वायतता हो। जहाँ स्वायत्तताक बात उठथ उहा भाषिक स्वायत्तताक बात फे ऊठना करथ। छिमेकी मित देश भारतक पश्चिम बङ्गालम बङ्गालीं, उत्तर प्रदेशम हिन्दी, मद्रासम तमिल अस्तक प्रान्त अनुसार मराठी, गुजराती, पजाबी आदि प्रान्तीय भाषाहुक्र आ-आपन अस्तित्व कायम कर सेक्थ कलसे यीहाँ फे मुस्ताङ्ग; मनाङ्ग, गोर्खा, लम्जुङ्ग कास्की जिल्लाम गुरूङ्ग भाषा ताप्लेजुङ्ग, तेह्रथुम, पाँचथर, धनकुटा, व इलाम आदि जिल्लाम लिम्बु भाषा सोलुखुम्बु संखवासभा, भोजपुरी भाषा, मयाग्दी, रूकुम, रोल्पा, प्युठान, पाल्पा, तनहुं, स्याङजा आदि जिल्लाम मगर भाषा, काठमाण्डौ उपत्यकाम नेवारी भाषा, धादिङ, नुवाकोट, रसुवा, सिन्धु, पालचोक, काभ्रे, सिन्धुली, मकवानपुर, दोलखा व रामेछाप जिल्लाम तामाङ्ग भाषा व अस्तक तराइक जिल्लाम थारु, अवधी भोजपुरी व मैथिलीहुंक्र आ-आपन अस्तित्व कायम कर्ना काकर नै सेकही ? तामाङ्ग हुकन्क छाई-छावाहुंक्र नेपाली भाषम शिक्षा हासिल कर सेक्थ कलसे तमाङ्ग भाषक बाहुल्यता रलक क्षेत्रम बसोंवास करुइंया बाहुनक छाइ-छावाहुक्र तामाङ्ग भाषम पढ नैंहुइना कहाँ बा कहके आज जनजातिहुँक्र कहती बाट।

आज देशम प्रजातान्त्रिक वातावरणक सुभारम्भ हुइलक सुनौलो अवसरम मुलुकम सक्कु समुदायक मनैंहुक्र आ-आपन भाषा तथा साहित्यक विकास कर्नां सल्बलाइल बाट। असिन शुभ घड़ीम देशक सक्कु नागरिकहुंकन आ-आपन व्यक्तित्व विकास कर्ना तथा भाषक विकास कर्ना राज्य समान अवसर प्रदान कर्लक खण्डम यी देशम बहुदलीय प्रजातन्त्र सुदृढ हुइ सेकी।

अनु० जग्नु प्रसाद चौधरी
गा. वि. स. धधवार-६
रैया

यी लेख जन आस्था साप्तायिक से लेलक हो।

युवक हुकन सन्देश

ले. कविराम थारु
कर्मला, बर्दिया

ओ...... विकास प्रेमी युवा हो, कान खोलके सुनोना
आँख खोलके देखोना, अन्यायके बिरोध करोना
कथसे कहुं मैं यी दुःखके कहानी
पशुअस बितता गरीबके जिन्दगानी
महलके पजर बुकरक निशान
आज साबित हो गैलबा उ पक्का जेलखान
ओ ..... मुक्तिदाता युवा हो..............

बच्चा सेन बुह्राइल तक सक्कु जरम कैदी
गोरमन ज़जीर बा हाथम हथकडी
मुहमटक ताला म बा पाइल अपराधी
मानव रुपी दानवनके हो यी मनषरी
ओ ...... न्यायप्रेमी ....

आधारात सम जन्नी वक्र भाँरा धुइना
स्कूल जाइ नै पाक लरका भेंरीक पाछ रूइना।
लडका तक दास बन परना जिन्दगानी
कैंदी जरम बिताई पर्ना खाक मारक पानी
ओ---- देशभक्त युवा ---- ---- ----

विसारम तक छुट्टी नाही कहाँ शनिश्जर
कोनोम रूइती बिताइ पर्ना सक्कु तै तिहार
कहाँ तक सुनाउ मैं यीहाँ कैंदिनके हाल
आज बुझ पर्ना बा यी शोषकनके जाल
ओ---- महान योद्धा युवा हो ---- ---- ।
एक शक्ति जोर्ना बा, क्रान्ति कर पर्ना बा
जरम कैंदिन मुक्ति देना बा

आत्म सम्मान

लेखक कृषण कुमार चौधरी
गा. वि. स. धधवा–६ बर्दिया

"थारु जाती बहुत पिछरल बाट, भाषा साहित्य पिछरल बातीन, आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक आदि इत्यादि रूपसे छिरल बाट अशिक्षक कारणसे अन्धविश्वास कुरूती म डुबल बाट, कला सस्कृति लोप हुइतिन।" यी कहाइ हम्र हमार तनाम बुद्धिजीवी, नेता समाज सेबी, साहित्यकार, लेखक, कवि हुकनक मुहम, कलमम सुन्ती व पह्रती ऐथी हम्र सबजन हुकनसे हँ म हँ मिलाए जैथी। हमन लागत हम्र जातिक पिछरल बाटी। हमन "साले थरु" कैक बलैलसे फे चुपचाप जाक पाउ पर परथ, आपन मुहमसे "हजुर का कहतो" से धेर ब्वाल नै सेक्थी हम्र तमाम जनहनसे "थारु गोरू" उपाधी से परिचित हुइलकेल नाही

प्रसिद्धि कमासेक्ल बाटी। का हमार मुह नै हो? हमन गोरूके संज्ञा दिहुइयन से तर्क कर सेक्ना सहंक बैंठ पर्ना। बा तफे काजे चुपचाप त! काकर की हमार नेताजी, बुद्धिजीवी समाजसेवी लेखक, कवि, साहित्यकार लगायत शिक्षित प्रतिष्ठित मनै हुक्र जो हमन पिछरल सज्ञा देथ। बस हम्र मुअल दाइक लर्कन छोटकी (मौसी) दाई जस्तक हेलाहा करवा पैथ वस्त करवा पैथी।

कौंनो फे चिजहुन नैं मजा हो कैक हेराहा कर्लसे उ नै मजा देख पर लागथ भलही उ मजा रह। जस्त हम्र हिरामोतीहन सुग्घर मान्क गहना संझथी, तर वाकर सटहा लोहाकहन धेर मजा व उपयोगम लानी व हिरामोतीहन घिनाहन वेकामी कैंदी वाकर खिल्ली उराही त अवश्य फे हिरामोती से लोहाकके उपयोगीता, माग धेर हुइहिस। हिरामोती बहिस्कृत हो जाई। तर हीरा हिरा हों, लोहाक लोहाक लोहाक हो रूपान्तर कब्बु नै हुउइया हो। वस्तक कौनो मनैया सुग्घर रलसे फे घिनाहुन बाल्या कैंक खिसी उरादेना ब घिनलग्तीक मनैया सुग्घर बात्या कैंक मजा मन्ना कलंसे फे सुग्घर रही, घिनाहुन मनैया घिनाहुन रही। सायद सुग्घर मनैया धिनाहुन देखुश्यन घिनाहुन हुन सुग्घर द्याख सेक्थ। सुग्घर मनैंया घिनाहुन बात्या कैंक सबजन खिझ्या देलसे वहिहन आत्मग्लानी हुइत वही आपन पर घिना लगहिस तफे उ जस्त बा ओस्त रही, औरजन कैंक उ मनैयक रूपम कौनो परिवर्तन ऐना नै हो। यीहाँ एक्थो का बात संझना उचित देख परथ की कौंनौ फे चिज, प्राणीं वा मनैन मजा नैं मजा मान, द्याख सेक्जाइथ लेकिन हुकन्हक आपन–आपन ठाउँम आपन-आपन महत्व बिशिष्टता रथिन! और जन नै मजा व मजा कतीम मजाम हुइना नै हो। जस्त दिउँतनके रक्षा भगवानन कर्ल वकथ कतीम दानवनक रक्षा फे भगबान कर्थं कना बात तथ्यहिन देख परथ।

आजकाल हमार थारू जाती असिन हो गैल बाती की हम्र गोरून हर जोतुया मनै अथवा लह्रीया हँकुइया लह्रेनवा हुँक्र तकी –

तकी वा दाहिन बाउँ कैक यीहँर उहँर घुमैथ वस्तक हम्र फे औंर जातीनके सस्कृति; साहित्य कला अथवा नक्कल कर्ना म घुमल बाती। हमार भाषा साहित्य कला, संस्कृति पिछरल बा। हम्र अशिक्षक कारणसे अन्धविश्वास कुरीतीम फँसल बाती। हम्र सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक रूपसे पिछरल बाती। हमार समाजके उत्थानके लाग हम्र सोचना काम झमेला मन्थी। कुई तुन्हक कान कौंवा लैगॅल कलसे हम्र आपन कान छग्ना प्रयास नैं कैक कौवक पाछ लाग खोजथी। अस्तकहँक शोषक सामन्त जाली फटाहा हुँक हमन ठग्ल बाट व हुँक्रहे हमन थारु गोरूके संज्ञा देथ।

का हम्र जातिसे थारु गोरू हुइत? अवश्यफे नैं हुई। हमन जे गोरुक संज्ञा, उपनाम देथा वक बराबर हमार फे बुद्धि बा, ताकत, क्षमता बा। हो जे हमन गोरु कहता ऊ हमार नैं जानल जानथुई तर हमार जानल ऊे फेत नैं जान स्याकथुइ। कौनो काम करबेर हम्र धेर गल्ती करथुइबी ऊ दान्वे। आखिर गल्ती जे फे कर स्याकथ यी स्वाभाविक बात हो। आपन नैं जानल नैं कर जन्ना गोरू होइना नैं हो बेन्से आनक इशारासकेल काम कर्ना गोरु हुई स्याकथ। हमार थारु जात फे नेता, मन्त्री, वकील, डाक्टर, इन्जिनियर, शिक्षक आदि तमाम क्षेत्रम काम कर्ती बाट ओस्तके हम्र फे हरेक क्षेत्रम फैलती बाती।

का हमार भाषा, साहित्य, कला, सस्कृति जातिसे पिछरल बा? अवश्यफे नैं हो, हमार भाषा, साहित्य, कला, सस्कृति रितिरिवाज पहिरन बा कहुइयन, देखुइयन याकर महत्व नैं बुझल व नैं जन्ल हुइत। यही से परिचित नैं हुइल हुइत। हुक्र याकर सकारात्मक अध्ययन कर्ना जरुरी देख परथ। हमार भाषा; साहित्य, कला, सस्कृति, रितिरिवाज पहिरन त आज हमन थारु हुइत, हिकन्हक आपन महत्व तौरतरिका बातीन, हिकनके फे अस्तित्व बातीन कैंक चिनारी दिहता। यी चिनारी (हाँक) से डरुइयन हमार भाषाहन पिछरल देखाक आपन भाषा जबर्जस्ती लाद खोज्थ। आपन भाषक प्रभुत्व खोज्थ। हम्र हुकनके भाषा

नैं जन्लसे पिछरल हुइना व हुँक हमार भाषा नैं जन्लसे कुछ नैं हुइना हम्र हुकनक भाषा बत्वाय लग्लसे खिसी करुइयन हमार भाषा बत्वाक त जानत ना और भाषा सिखना स्वाभाविक रुपसे कुछ अप्ठेरो रघा।

का हम्र अशिक्षाके कारणसे कुरीति अन्धविश्वासम फँसल बाटी हा हम्र अशिक्षित धेर बाटी तर अशिक्षितके कारणसे अन्धविश्वास, कुरीतिम फँसल बाटी कलसे अमेरिकी जापानी, रूसी, चिनिया, जर्मनेली बेलायती आदि विकसित देशके मनै फे त अन्धविश्वासम फँसल बाट। यीहाँके तथाकथित विकसित हुइयन फे अशिक्षित हुइही तब्त अन्धविश्वास कुरीतिम फँसल बाट। अन्धविश्वास कुरीति त समाजरहत समपली रहथ चाहे जत्रा शिक्षित समाज रह।

का हम्र थारू आर्थिक, राजनैतिक सामाजिक रुपले पिछरल बाटी? हमार संविधान सबजहन बराबर हक अधिकार देल बा चाहे उ थारू, बाहुन, क्षेत्री जोन हवाए। हम्र नेपाली नागरिक हुई, हमन आम्दानी नैं कर पैना कैंक नैं कल हो राजनिति ना करो, स्कूल जिन जाव, प्रधान मन्त्री, मन्त्री, डाक्टर, वकील, इन्जिनियर, प्राध्यापक हकिम जिन बनो कैंक रोक छेंक नैं करल हो। बेनसे हम्र अप्नमुराधो आपन हक अधिकार के सदुपयोग नैं कर स्याकथुई काकर की आपसी बेमेल राजनैतिक स्वार्थ, आर्थिक विपन्नता बा जे स्याकता उ मन्त्री, डाक्टर, वकील बन्ती बा तफे सायद हम्र संगठित हुइलसे त हमार हक अधिकार जे उपयोग कर नैं दिहथो बहिसे लिह (छिन) सेवबी। एकताके अभावसे हम्र हमार भाषा साहित्य, कला, संस्कृति, रितिरिवाज चालचलन पहिरन के प्रचार प्रसार कर नैं स्याकथुई, संरक्षण कर नै स्याकथुई। हम्र आर्थिक राजनैतिक, सामाजिक शोषणम परल बाटी।

आज काल "हम्र थारु पिछरल बाटी, कना वाक्य से डराक कुछ पहल लिखल शिक्षित हुँक आपनहन थारू हुइतुँ कहक फे हिचकी चैथ। आपनहन आधुनिकता देखाइकलाग आपन मातृ भाषा संस्कृति ह विस्रा दारता। हमन थारु पोशाक लगाइल जन्नी (महिला) तथा थारू

(पुरूष) पर घिना भावनासे हेर्थ । सागरमाथा अस धार मुन्टा (शिर) लगाक हम्र "थारू हुँ" कहक पर्ना बा थार से थारू बन्लक हम्र थारू हुइ । हमार आपन रहन सहन, चाल चलन, भाषा साहित्य कला संस्कृति रितिरिवाज बा । हम्र सब थारू हुक्र एकजुट होक हमार भाषा साहित्य, कला संस्कृति रितिरिवाज, पहिरनक संरक्षण, सबर्धन करपर्ना बा । जे ढिलाए ऊ बिलाए, यदि हम्र ढिलाई करबी कलसे एक दिन थारू शब्दकके अन्त्य हुइसेकी । उह मार आब हमारम थारू हुईतुँ कना आत्मसम्मानक रगत सचार चालु कराइपर्ना बा ।

गोचालीनम्वार आहवान

लेखक सूशील चौधरी
लाटीकोइली–६
पातल गंगा, सुर्खेत

हे ! शोषित पिडित थारू भाई
जागो उठो आपन हक लिहक लाग,
छातीमन आँट व शाहस लेकन,
दु.खके नोनार आँस चुहाक नाही,
बदलाके भावना लेकन ।

आब कहाँ सम्म निदाइल रबौ,
अन्धार कोन्टीमन
एक टाँरा घाम आस्याकल
हेरो त आकन अंगनमन,
हे ! शोषित पिडित थारू भाई ····· ।

सामन्ती जाल रूपी घुस उठाक त हेरो,

दुनिया कत्रा आग पुग स्याकल तुहिन छोड़कन,
तर तुँ आम्हिन गोम्हन्या कति बातो कुट्न्यार हर पकर्कंन,
हे ! शोषित पिडित थारू भाई····· ।

कत्रा मनै शिक्षाके दिया बार्कंन,
सभ्यताके शिखर पुग सेकल,
तर, तुँ आम्हिन कर्महन दोष देकन,
कपार पकर्क खुई ! कति डटकरल महसुस करतो,
समस्याके पर्वत्वा चिहुर्ना शाहस करक छोडकन,
वकर आगु लम्पसार पर्कं आत्म समर्पण करतो
(हे ! शषित पिडित थारु भाइ ····· ।)

तिरस्कार व बेइज्जती सहक जिती मुवलसे,
इज्जत पूर्ण अस्तित्वक प्राप्तिक लाग,
मुकन जिय सिखो
दासताके जंजिर टूटाइक लाग,
आगिक अँगथा होक बर सिखो,
सूर्यंक किरण होक संसार अजरार कराए सिखो,
हें ! शोषित पिडित थारु भाई····· ।

उह मार आब,
आपन भाग्य चम्काइक लाग,
आपन कर्म सप्राइक लाग,
तकदिरके पन्नामन
बिवेक व पस्नाके मूल फुटाओ,
छिट्कल शक्तिहन जुटाओ
हे ! शोषित पिडित थारू भाई
जागो उठो आपनहक लिहक लाग
छातीमन आँट व शाहस लेकन
दुःखके नोनार आँस चुहाक नाही
बदलाके भावना लेकन ।

❖ उ फेरी अइती बा ❖

लेखक विष्णु प्रसाद चौधरी
गा. वि. स. मगरागाडी–३ धोविया

वाकर आदत बैंष्ल बातिस सक्कु कमैयन उठ्तीकी काम अह्लैना ओ अप्न पूजा– पाठय मिर्ना। सद्दक बानी रलसे फे आज उ आपन पूजापाठ झट्ठ ओरैना सोंचम बा। काकरकी आझुक संबिधान दिवस म झट्ट पुगक पर्ना बात वकर मनम घरि–घरी ख्यालतिस। जाइक पर्ना फे दुर सदर मुकाम गुलरियाम रहलक ओर्से ऊ सबकाम फटाफट कर शुरू करथ।

वडे मन्दिरके पूजारी अस ऊ हरि– हरि ― नारायण कहती लग्गक झरनम लहाथ जाइथ। लहाके सेक्के दिनओर मुँह करल ध्याबर पुत्युतैती ध्यान करथ ओ सेक्के जहोंर तहौंर पानी छिटथ। झरनम कर्ना सक्कु क्रिया करम ओराके ऊ फेर हरि…… हरि…… राम ―राम जसिन क़ैयो भगवान के नाउँ लेहती घर घुमथ।

अइतीकी कमलहरीह ठाक पार कहके पूजा कोठाम चल जा–इथ। टिनटिन ―टिनटिन घण्टी बजैती विभिन्न किसिमके मन्तर बर्षरैती आपन पूजा शुरू करथ। पूजक क्रमम ऊ आपन सारा फूलवारी गुन्गुनैती घुमथ ओ सेक्के भन्सा कोठाम आइथ। उहँ आइथ त कमलहरि सब चिज तयार पर्ल रथिस। ऊ ख़ाना रिझाए (पकाए) शुरू करथ। तब्ब–हे वाकर कमैया 'मनपुह्लैवा डवारीथे आक कह थस। "मलिकवा' हो मलिक्वा!! आज मही बिदा दिहक परल।"

"कसिन बिदा मङ्ग्थ्या रै असिन कमाहिक दिन फे" जिम्दरूबा भन्समसे कहथ।

कसिन बिदा मंगम हजुर जन्तीत बातो काहु जन्नी सारि–वसा बेराम बा कहके। आज काल और कर्रा हो जाइता उहमार

एकचो नेपालगंज सम पुगादारू कहतुँ।……― मन पुह्लवा आपन बात ओरैल नै रहथ। आब ऊ रुप्या मांगकलाग रहथकी ज़िम्दरुवा विच्चम बात खप्कती ब्वालथ। "कहाँ भन्सम पैंठ–पैंठ करता गधा उहर बैंठक बत्वा।" ऊ (मनपुह्लवा) पछगुरके बेंर्रीम बैठथ ओ आपन बात पूरा करथ। "दान्चे रुप्या फे देबो काहुँ हजुर! मै त आब्र तुहाँर स–हरा बातुँ।"

तै कत्रा दवाई करैब्या रै गधा ओसिन कोह्री जन्नीक। दवाई कराइत – कराइंत त्वार सक्कु बिघा कटाके फे पाँच पाँच हज़ार ऋण होगैल। ऊ त कोह्रयाके पो बेराम पर्लक हो। उठना, दुई दिन काम कर्लसे फे बेराम होजैना यी काहो ? आब तोहीना ऋण दिह सेकम ना त असिन धान दैना समयम छुट्टी। सटाहा ख़ोज्क जैब्या त जा।"

मलिकवक यी बात सुनके मनपुह्लबह मनम रिस त लागल रथिस तर काकर विचारा रुप्या पैना और डगर नै रलक ओर्से न–म्रहोक फेर कहथ–"तु नै देबो त के दी महीं।"

अन्नम जिम्दरूवा रिसा जाइथ। "तै नै दिह सेकम त कहती बातु त तोही कत्रा किच–किच कर परता गधा। एक चोट कलक बात नै मानी। बडा भारी मनै बन खोजी साले। तिर सेक्नास ला–ग्थिस की ओस्तहँ गध ह।"

मनपुह्लवा आब यहीसे काम नै बनी कन बात बुझ धारथ। उ अन्त ओर ख्वाजक पर्ना विचार करथ ओ रानपरोसके जहन समझथ। तर देना असक सब मनैनके आपननध अवस्था द्याख़थ, अप्नेहत बेसहारा बाट कलसे म्ही कसिक सहारा दिह सेकही। यी बात सोंच्ती कुछ नै बोल्के गहीर मन लेल उ आपन बुक्रावर चलजाइथ। चुपचाव एक शुरले आपन जन्नीह ह्यारथ दाइक हेरचाहकर बैठलक नौ वर्षीया छाईह ह्यारथ ओ अँधार मुह करैंर अन्त ओर ह्यार लागथ। आपन जन्नीक दशा देख़के ओह्री मुह फोर्के रुइनास लाग्थिस तर आपन दिलके दर्द दुनियाह सुना-

ए नैं चाहथ जे वकर दुःखम हँस्सी उराइता। " सम्झुइया मनैत सब बुझ्ल बाट " उ स्वाचथ। तर मुन्टा लगाके एक सुरले उ आपन जन्नीक बेराम पर्लक घटना सम्झ लागैथ जौन अकल्हे (अकेली) हुइतीकी हर दम सम्झना आ जैथिस।

" विचारी हप्तादिन सम त बेराम-बेराम घामपानी नैं मा-म्क धान लगाए गैल। ओसिनम फे जिम्दरूबा छुट्टी नैं दिहल। उ-पाय नैं लाग लग्लिस त का करी घरही रह लागल। स्याकल सम ज-री बुटी दवाई, विरूवा कर्नु दन्चे चोखैतीकी काम कर बलाई लग-नाम कहाँसे चोख़ाई ना दवाई विरुवा कर लैजाइकलाग छुट्टी देना ना घरहीम फे मजासे चोख़ाई देना यी रोग बिर्गना सब जिमदरूवक काम हुइस।"

यी बात सम्झतीकी उ रिसले आगी हो जाइथ। आज त झन रिसले चुर बा। उ कैंयो चोट जिम्दरुवह मारके भगना बात फे स्वाँचथ तर ओसिक कर नैं स्याकथ काकरकी वाकर साथम जहान, लडका पडका बातिस। भिन्न-भिन्न मुर्मुरैती एक चोट फेर जन्नीक ओर ह्या-रथ त छाइह म्वाक डगर दुर हेर्ती आँस गिराइत याखथ। उ अप्नेह फे आँस पोछती छाइह सम्झाई लागथ "जिन रो छाई, हमार गरीबन के लाग के बा जे री दिहुइया। परथ हमार उप्पर त परथ।"

ऊ जन्नी से फे दुई बात बत्वाई ख्वाजथ तर अस्पष्ट बोलिक कारण बत्वाई नैं स्याकथ। जिना आशा छोडके छाइह बह्-यासे ह्यार कसिक खेन्हवा ओर मनमलँ चल जाइथ। उहर ओर खा-ना खाक जिम्दरुवा जाइक लाग तयार रहथ। एक्थो छावह छड्के सब परिवार दिवस मनाए जाइक लाग लहरूम सवार हुइथ। बस स्टेश-न पुगके सब जान बसम जइथ। सदर मुकाम उत्रतीकी ओही शिवजी जय नेपाल! ओ नमस्कार कहती मनैं वाकर पाछ पाछ करलग्थ उ सभा स्थल ओर लागथ जहा जाके अतिथिके रुपम मञ्चम उपस्थित हुइथ।

कार्यक्रम के शुरु हुइथ। अतिथिके रूपम सी. डी. ओ. डी.

एस. पी. लगायत गन्यमान्य बिभिन्न संग संस्थाके प्रतिनिधि फे बलागैल रहथ। वक्ता हुँक बोल्ना क्रमम सविधान के मुल-मुल विशेषता के व्याख्या कर्थ। कोइकथ "हाल सम्म के नेपालके सबसे प्रजातान्त्रिक संविधान हो जोन आझुक दिन घोषणा हुइल रह। यी संविधान से मिलल मौलिक अधिकार पाके जौन स्वतन्त्रता हम्र पैलबाटी याकर खुशियाली शब्द-भव्यक कर नैं सेक्ना अस लागथ। कुई जुन्हुक सार्व भौम सत्ता जनता के हाँथम आईल बा कहके कथ। यी संविधानके विरुद्ध करूइया प्रतिगा-मी तत्व फे हमार देशम बाट जेहीसे प्रजातन्त्र खतराम बा। हमार जसिन कर्मठ नेपाली सपुत हुँक याकर लाग सचेत रहक पर्ना जरुरी बा" अस्तहँ अस्तहं बात कर्ति वक्ता हुँक जोड जोडसे बोल्थ उहँरसे दर्शक हुँकनके ताली साथ दिहाकरथ।

अस्तहँक बोलना क्रमम शिवलाल शर्माके पाला अइथिस। उ शहिदहुकनके सम्झना कर्ति धिरसे भाषण शुरू करथ। भाषण कर्ति जोडसे बोल्ना गर्ति फे बढैंती जाइथ। जे चोर ओकहें भारी स्वर कह अस उ घाँटी फलैती भोजहा गोला पट्क अस प्रजातन्त्रके वकालत कर लागथ। " आजकाल प्रजातन्त्रके लाग खतरा कलक यी संविधान नैं मन्ना प्रतिगामी तत्व हुकन्से बा। प्रतिगामी तत्व हुकनके चाहल व्यवस्था आई कलसे छाई छावा, दाइ बाबनके बिचम चिन जान नैं रहथ, सब जन एक्क कोठम छेग्रीभेरो अस रहक परथ। कब्भु फुर्सत नैं मिलथ त फे खाना खाईबेर तथिया मांगक पर्ना जसिन .....

अन्तम ओसिन व्यवस्थाके पाछ नैं लाग्के प्रजातन्त्रके रक्षा करक लाग जन समुदायसे अनुरोध कर्ति विदा हुईथ। पाछ और वक्ता हुक फे ओस्तहक जोड-जोड से भाषण जारी रखथ।

संझ्यक कार्यक्रम समाप्त हुइथ। जिम्दरूवा उहरी दुइ चार दिन बैठना सोंचम घर ओर जाइ लागथ। तब्बहें गाउँसे छावक फोन आइलक ख़बर थाहा पाइथ। उ हाल खबर, पुँछक लाग त हुई कना

सोंचम रहथ तर आपन छावक बात सुनके छटपटाइ लागथ । संझ्या हुइलक मार छावह् काल अइम कहिके घर ओर चल जाइथ ।

हुइलक का रहथ कलसे जब मनपुह्लवा खेन्हवम जाइथ वही मनमलँ देखके सक्कु कमैयन पुछ लग्थ । उ जिम्दरुवा से हुइलक सक्कु बात एक-एक कैक बतझाइथ । बाकर बात सुन्के सक्कु कमैया जिम्दरूवक उप्पर रिसले आगी हो जैथ । आजकालफे छुट्टी नै देना यी कसिन जिम्दरुवा हो । अप्ने दवाई कराइक पर्नाम झन ऋण फे नैदि-हम कहथ । ज्याकर कमाही खाइथ । वही और साले गधा कैक कहथ हम्र जत्रा काम कर्लसे फे ऋणक ऋण जब सम्म दवाई नै कराई तब सम्म कोही नै कर्ना " कहिके कमैयनके अगुवा प्रसादी बात धरथ।

वाकर बातम सब जान मञ्जुम हुइथ ओ भैंस, गोरू बग-रोम बाँधके खेन्हवा छोर देथ । जिम्दरुवा उहाँ रात भर निद नै प थिस । उ कब बिहान हुइता कहके छटपटाइथ । बिहान हुईतीकी पुजा पाठ गोली मार्के संघरीयक मोटर साइकिल लेक गाउ वर लागथ ।

सक्कु कमैयन बुक्रम भैंस गोरू भूँखल बगरोम देखके उ भा-षण जोरसे कल्कलैती सब सब कनैयन नै मजा नैमज। गरीयइती घरम पैठथ । यी सब काम मनपुह्लवक हुइस्कैके उ छावह मनपुह्लवह बलाए कहथ ।

मनपुह्लवह आइत देखके सक्कु कमैयन जिम्दवकर्थे जेंथ और जहन फे आइत देखके जिम्दरुवा रीसाके " तुह् काकर ऐलो जा ब तुहनसे काम नै हो " कहथ ।

यी बातले कमैयन कौनो असर नै परथ । हुक्र दवाई नै क-राइत सम्म काम नै कर्ना कैके अड़िग रहथ। ओत्तिह जिमदरूवक ओ कमैयनके बिच बोलीले बाझा बाझ हुइथिन । उह क्रमम " तैं जसिन शोषक यीहाँसे भागक परी हमन भाग कथ्या कहिके प्रसादी कहथ । जिम्दरूवा यी बातले त्रसित हो जाइथ ओ बात बनाइथ । " मैं का नै दिहम कहतु? दिहम कहती कहती फे तुहन कत्रा किच किच कर परता ।"

काकरकी उ बात बुझ धारथ मही नै छोरही कैके उ तु-रुन्त रु. २००० दुइ हजार प्रसादी हन दिहथ ओ दवाई करैना ठाउँ ब-तैती सम्झाइथ । मनपुह्लवा ओ प्रसादी मनपुह्लवक जन्नी लेक नेपाल-गञ्ज ओर लग्थ । और कमैयन जुन्हुक संघर्षम सफल हुइलक ओर्से खुशी मन्ती कामम लग्थ ।

हप्तादिन पाछ मनपुह्लवा ओर प्रसादीह जिल्ला प्रशासनसे बलौवा आइथिन । उहाँ जाके बुझबेर ऋण नै बुझलक कैके मनपुह्लवा ओ कमैयन लगाके लुटपाट मचैलक कैक प्रसादीह मुद्दा लगाइल रहथिन । झुट्टा मुद्दाके तारेख़ बोकाके गरीबन सतैना जिम्दरूवा प्रजा-तान्त्रीक अधिकार पैलबा । गरीबके मुक्तिके लाग लाड्ना योद्धा हुकन कैद कैके आपन प्रजातन्त्र बलगर हुइना सपना देखल बा । थोरिक दिन पाछ मनपुह्लवक जन्नी ओरा जैथिस वाकर पिडा ,ओ जिम्दरूवा जत्रा सतैलसे उ झुक्ना पक्षम नै हो । उ कैयौं कमैयनके साथ लेक संघर्षम उत्रना आँर कर्लबा ।

थारू जतिनक बरका तिहवार माघ संक्रान्तीक उप-लक्ष्यमा सम्पुर्ण शोषित पिड़ित वर्ग हुंकन अन्या-यक विरुद्धम लडना शक्ति ल्यान दिह कना शुभकामना व्यक्त करती ।

अमर डाँगी — प्रमुख

दामोदर अधिकारी — उप–प्रमुख

त्रिभुवननगर नगरपालिका, घोराही (दाङ्ग)

❖ हमार दशा ❖

ले. लक्ष्मण चोधरी
लाटीकोइली गा. वि. स. वा. न. ८
कालीमाटी गाउँ सुर्खेत

रातदिन हम्र कर्थी काम
प्याट भर खाए काहाँ पैथी माम
साहुन्के घर काम कर्थी नही पैथी दाम,
भुखल प्याट काम कर्थी सद्द घाम घाम।

आनक भरम बाँच पर्ना कसिन हयार जीवन,
पशु असक कारवा पैथी नस्से रूइथा यी मन,
शिक्षा कना का हो ? थाहाँ निहो हमन,
पढी लिखी बुद्धि सिखी चिन्ही आपन दुश्मन। २

एक जुट होक आग वढ्ना शाहस हम्र करी,
दानव असक सामन्त हुकन हम्र खसाई परी,
अधिकार त मंग्ना निहो अछिन्क लिह पर्थी,
आपन ठाउँ आपन गाउँ स्वर्ग बनाई पर्थी। ३

देश विकास कर्ना हमार फे अधिकार बात,
सम्झो-बुझो दादु भौजी उठाओ सक्कु हाँथ,
थारू जातीन्क उत्थान कर्ना उठाई हम्र बात,
अपना भाषा आपन संस्कृति बँचाई हम्र आव। ४

★

❖ हुई एक जुट ❖

लेखक मान वहादुर चौधरी
गा. वि. स. लाटीकोइली वड़ा नं.९
बुदबुदी गाउँ, सुर्खेत

गोची गोचाली नेपाली सपुत !
हुईल विहानिक ब्याला बनी एक जुट !!
काम हमार खेतीपाती रातदिन धन्धम !
रगतक पसना सामन्तिके फन्दम !!

सामन्तिन्के होरी खेल्ना दुःखिके रगत !
सद्ददिन अन्धार रना गोचाली जगत !!
कली युग लागी गैल लौव जमाना !
एक नास पहिरन अधिकार समान !
एक जुट हुई गोचालिम निकरी ढिलाही !
जब हुइवी एक जुट तब हुई मलाही !!

❖❖❖❖❖❖❖

❖ गोचालीह यी सन्देश ❖

लेखक राम लौटन चौधरी
गुलरिया, दाङ्ग

गोचाली हो ! गोचाली तुहिन बा यी सन्देश
गोचालीह छोरक जिन जैहो तुँ परदेश

यीह माटीम जरमली यीह माटीम बढ्ली
यीह माटीम रङ्ग भर्ना आमिन बा धेर बाँकी

यीह फूलवारी हन सक्कुनके जिम्मा बा हो बँचैना
किसिम किसिमके फूला फूल्ना यी फूलवारी सजैना
यो बूलवारी बँचाइकलागसे बैठ्हो बेन्हवा
एक दिन अउइया बा सफलताके दिनवा

लक्ष्य हमार काहाँ पुग्ना बा उह सोंच बनैहों
लाखौं लाख जनता बाट गोचालीक पाछ दो-याक
लै जैहो।

❖❖❖

❖ लडकन के इच्छा ❖

नाकरो दाई बाबा सामन्तिन्के संगत,
चुस्ना सम चुससेक्ल दुःखिन्क रगत।
ईश्वर रूपी दाईबाबा हमहन देब शिक्ष,

पढ्बी लिख्बी ज्ञानी बन्बी कबि पूरा इच्छा ।
पढदेव लिख़देव राम-राम बोली सिख़देव हमन,
पढबी लिक्बी हटैबी सामन्ती शोषण ।
जोरकरी शिक्षा लना बनाई आपन गाउंठाउ,
शिक्षा लेक वरा हुइबी चनैबी देश दुनियम नाउँ ।
संसारम शिक्षा विद्या सबसे भारी हँथ्यार बा ।
गाउं बनैना देश बनैना हमार फे अधिकार बा ।
अग्ती जुग से पुर्खनक रगत साम्न्तिनके शिकार बा,
शिक्षा बिना यी जमानम जीना जीवन धिक्कार बा ।
मनम लिखो हमार कहाई सुनो दुनु कानले,
धर्मलुटो दाइ बाबा विद्यादानले।

❖❖
❖

❖ किसानके ब्यथा ❖

ले. भगवती चौधरी, बर्दिया

मै एक किसान हुँ, कृषक फे मही कथ
मै एक दुःखी लदिया हुँ, हारा लुछी कर्लसे फे सह मही परथ
मै एक शहनशील शक्ति हुँ, पेट भर खाई नैं मिललसे फे सहपरथ
हथियार म्वार हर व फरूवा, युद्ध भूमी खेतवा हो,
घर म्वार खरक झोपडी, सुतना धानक पैरा हो
धान म्वार बडका बाली, गोहुंलाही दोसर हो
वाली उब्जैना म्वार काम, सक्कु सिमोट्ना जिम्दरुवा
हक म्वार नै लागत, पैठूँ अधिया बटैया ।

(१)

मै एक किसान हुँ ....
माघ आइल कथ त डर मही लागत
पाइल जग्गा छुटथ त बिचल्ली म्वार परथ,
थारूक दशिया, देवारी ब माघ आइत त दशा मही लगाय
पोरुक साल ऋण पाँच सय रह असौं कसिक हुइल पाँच हजार
मुहक जवाफ लगाए नैं सेक्थुँ; यीह हो म्वार कथुँ

(२)

मै एक किसान हुँ ....
छावा छाई कहत रलह असौंसे पढ जैबी
म्वार हालत यी वा कसिक पढाऊँ लिखाऊँ
पढ़ना लिखना मनम गुनल, छावा पाइल छेगरी भेडी
क, ख, लिखना हाँथम छाई पाइल करिया भाँडा-कुडी
करिया अक्षर भैंस बराबर कलक हम्र सुन्थी
सुन्ना हमार काम नै हो काम कैक हम्र देखैथी,

(३)

मै एक किसान हुँ, कृषक फे मही कथ
मै एक दुखी लदिया हुँ, हारा लुछी कर्लसे फे सह मही परथ
मै एक शहनशील शक्ति हुँ, पेट भर खाई नै मिललसे फे सहपरथ

★

❖ थारु जाति हुकन हेर्ना एक दृष्टिकोण ❖

लेखक:-भगवती प्रसाद चौधरी
अध्यक्ष गा. वि. स. गढवा
दाङ्ग, देवखुरी

थारु जाति संसारके हरेक जाति मनिक एकथो बरा पिछरल जात हो । यी जात अत्ना पिछरल बा कि संसारके एकथो मुख्य जतिनमे एकर गन्ती नै हुइत कलसे फै हुइथ। यहें कारणसे थारु संस्कृति संसार मे बिलाइल बा पत्ता नैं हो कि थारू जातिनके आपन जातिय संस्कृति रितिरिवाज, चाल-चलन कार्यविधी व्यवहार नै हो, बेन मै यहाँ तक जोर देके कहे सेक्थु की थारूनके आपन जातीय भाषा रितिरिवाज, चाल-चलन, कार्यविधी व्यवहार संस्कृति संसारके और जातिनसे अलग बा ।

थारुनके बारेमे थोर बहुत जान लेना जरूरी बा। दुःखके बात बा की यइनके बारेमे जानकारी कइना प्रशस्त सगठन उपलब्ध नै हो, तब फेन हमार आजा पुर्खनके कहलक ओ थारू गीत हे साधन मा-

नके यहे कह सेक ज़ाइथ की थार से थारू हुइलक हो। थारू गित मे कहल ग़ैल बा–

दाङ्ग रहुइया दंगवरिया रे
देउखर रहुइया देवखरिया,
थारु जात रे परदेशिया
तिरिया छोड़ी अइल "

(सजना गीतमे)

उप्परक गित से हम्रे थारु जात हे एकथो परदेशिया कहनामे पाछे नै बाती बेन मै यहे कहे सेक्थु कि दाङ्गमे रहुइया दंगवरिया, देवखरमे रहुइया देवख़रिया कलक ननहक परदेश से अइलक ओसें परदेशिया कहिके थारू जातिन कहल गइल बा।

आपन जन्निन (पत्नी) छोडके विदेश लग्लक बात मघौवा गितमे कहल बा। थारून हें आपन देश हे कि तो उ देशमे खोब सुखा परल हुई याते उ ठाँउमे जंगलके अभावमे पसुपालन मे असुविधा परल हुइ याते उ देशके शासक खोब सताइल हुई यी बात हे निश्चित कैना मुश्किल बा।

आपन आजा पुर्खनसे थारूनके थार प्रदेश से अइलक ओ मुगल शासक से सत्वा पाके अैलक जानमिलल बा। पुर्खन के कहोई बा " हमारे मुसलमान शासकके सतइलक ओसें यहाँ आँपुगल हुइ"

हुइना फे हो गितमे कहल फे बा–
" तोरे काँटु उँटवा–गरदनवा रे
काँटु रे लामी पुछवा
भिडबु मै छुरी रे कटारी
मुगल से मै लड़बु
मरद जलम जो मै पैतुरे
घोडवा दौरइतु
भिड़तु मै छुरी रे कटारी
मुगुलसे मै लडतु "

(सजना लयमे)

खेत बिगारे दुँदरा रे
कुँवा बिगारे पिपरा,
अरी हे।

माता– पिता जे नाव बिगारे
मुगुल बिगारे गाँव

(१)

छोडी देबु राजवा रे
तोरे शहर भण्डारे
काल रुप मै हुई
डासौं मै तोही "

(माधो गितसे)

" खाडा रोटी खैही दुरपती रानी
लडही मुगुल से "।

" मुसलमान हम्रहिन सताइ लग्ल यहिनसे बचक लाग हम्रे सुबर पाले सिखली, सुबर खाए सिखली ओ आपन जनमलक गाँउ फ छोडक सिखली "

थारु रामलाल वैष्णव
(मानपुर गढवा दाङ)

उपरक कलक आजा पुर्खनऔं थारू गीतके अध्ययन से पता चलथ कि थारुनके आपन ठाँउ हे सुखा जर्ता से नै छोडलक हो बेन ओइनके उप्पर मुगल शासक के ज्यादती से छोडलक हुइत कना प्रस्ट हुइल बा।

अत्ना कति केल का ? सब थारू थार प्रदेश हे एक लागे छोडके ठाँउ ठाँउमे लग्ल ? बेन धिरे-२ घरक परिस्थिति अनुसार थार प्रदेश हें छोडके ठाउ–ठाउमे तराई क्षेत्रमे लग्ल जहाँ-जहा आप बन्दोबस्त मिलाई सेकल। जहातक थारू समाज खेतीपातीके पेशेवर हुइलक ओसें बनजंगल तराई फाँट उजाउ जमीन हेर्के बन फाडके, बैठल यह ओसें तराई फाँट भर थारु बस्ती घना वा चाहे भारतके तराई फाँट हो चाहे नेपालक तराई फाट हो।

जस्तक २०५१ सालसे २०२६ के बिचमे दाङ्ग देवख़रसे जिम्दरबसे सत्वा

पाके धिरे-धिरे सोलार बुढान जैंती बात ओस्तहेक थारु फेन सत्वा पाके थार से धिरे-२ तराईके विभिन्न फाँटमन लग्ल ।

थारू किसानका कारणसे बुढान सोलार जईती वता कना स्पस्ट उत्तर जिम्दरूवनके शोषण दमन हो कना ते आगे कहि सेकल गइल बा ।

थारू थारू एक जात हुइती हुइती फेन सक्कु थारूनसे भात मिलथ कना अज्ञान्ता हो । थारु थारु हुइती त फ़ेन सक्कु थारूनके भात पानी नै चलथ जस्ते कुम्हार, दनुवार, कठरिया थारू, थारुजात होतब फेन आबर थारुनसे भातपानी नै चले ।

पहिले हम्रे का जात रहि कना पुष्टिकरण ओइनके घर से करे सेकथो। उदाहरण के लाग बेचुराम महतो [पकवोइ दाङ्ग] कल हमार थर चूरे दहित हो । हमार पुर्खन थारसे भइलक अहि गडरिया हुइत । पंचन भलादमिन दही खवाके पात लेलक वर्से दहित थर हुइल । आवर आगे कल सतगौंवा नेवार हुइत, चमार पदमजगैया हुइत । पसिया थर सुवर पलुइया पासी जात हुइत । श्री रामलाल महतो कहल हम्रे रा जवंशी क्षेत्री हुई । श्री गुरुप्रसाद गुरूवा कहल -दुहुना बठवा डाँगी क्षेत्रि हुई । श्री बेचुराम महतो कहल - थर बाभन, ब्राह्मण जात हुइत बाभन थारु बठिनिया लेलते ओकर कोख से जरमल सक्कु लडका परका थारू जात हुइल । ओसहें कलवरिया थर कलवार लौवा, थरवार कटुईयाँ मुसलमान, मगरौता, थर मगर जात से थारू हुकलक पुष्टि हुइथ । यि सब कारणसे यहे कहे सेकक जाइतथ की थारसे थारु हुइलक हुई वो थारू जात बहुत जात मिल्के बनल जात हो यानी ध्यार जातके मिश्रित जात हो

❖ ग्वाबर के कान्ही ? ❖

मंगल प्रसाद चौधरी
उत्तर अमराइ (दाङ्ग)

दाइत म्वार घर भितक भन्सरी,
बाबा म्वार काम कर्थ मजदुरी ।
मै त गरधूर-या, म्वार जन्नी बनलबा घरक मलकीन्या ।
म्वार जन्नी हयारबेर कवा सुग्घर देखपर्थ्या,
घटवा पानी दाइ म्वार कैं दरथ्या ।
ग्वाबर के कान्ही, क-या भोकटी मिस बेर जन्नी लाज मन्थ्या
म्वार घरम केके अइथा, जान नै सेकतु,
ध्वाक लग्नाकी नमस्ते, कहनै जनतु ।
सकुन सलाम बा, चारी ओर म्वार ज्यान अकल्हें बा ।

बत्कोही पापी मनै के हो ?

रामकुमार चौधरी
वांके विनौंना १ जवरपुर

एक गाउँम एकथो जिम्दरुवा रह । वाकर पाँच भाइ छावन रलहस । दुई थो छाइन व एकथो जन्नी रलहस वाकर सम्पतिक नाउम तिस बत्तिस विघा जग्गा रलहस । गईया, भईस, लाला बाला प्रसस्त रलहस खैना लगैना फे कमी नै रलहस । त उ सम्पत्ति बरा मजासेकमइलक सम्पत्ति रलहस । जम्म एक दुई बोतल दारू लेक वसिन सजिलोसे सम्पत्तिम पाँचघर रैती बैठाकन खैल रह । ऊ पाँच घर रैतीनक कमैलक कमाही ऊ असिन मजासे खाए कि ? उ पाँच घरक मनई वन्वा फारक जोतलसे फे वाकर लम्वरी बन जाइस । हुकनक वन्वमसे कमाकन उब्जाईल बाली फे उ जिमदरूवा बटैया खा देना कर । जवा धिवर

वन्वा फारक छोत्लसे फे उ बटैया खा देह। वस्तक समय बित्ती गैल। वाकर बेगारी करलक त झन वयान कैक साढय नै हो। जब बर्षामन खेती कर्ना ब्याला हुइल त आपन घरक खेतवमन पानी लागल, लगैना काटल वियार व करल लुर छोरकन फे वाकर धान लगा दिह पर्ना रह। वस्तक साहामन धान कट्ना हुइलसे फे आपन घरक धान चाहा झर्ना होगैलसे फे आपन धान कट्ना छोरकन जिम्दरुवक धान काट पर्ना बस्तहेक वाकर लाग धना कुटा देना। चाउर केरा देना। त्याल पेरा पिठा पिसा देना। काठी कई देना। बस्तहेक वकर जहान बच्चा या उ जिमदरवा अप्नेह बजार बैठल ब्याला वाकर लाग खैना चाउर, दाल काठी और अन्य सबचिज बोकन लैजाइ पर्ना रह। जब भरवा बोकन जइना हवाए त मई अत्रा भरवा बजार पुगाई नै सेकम कलसे वा म्वार जिउ ठिक नैं हो कलसे त्वार पाल्या बा जसिक लै जा जासकजा! अत्रा समान त बजार पुगाई पर्ना बा नै ब्वाकतसम्म छुट्टी नै पैब्या कना कर सम फे लगाए एक दुइ बात दा-वे ब्वाल अस करलसे महोसे बर्ता बोलब्या का महीसे बरा हुइल्या कैंकन उहीहन मर्ना पिटना फे कर। असिक उ जिम्दरुवा मनइन उप्पर अत्रा दमन लडल रह। जस्तक लरहियाम जोत्ना बर्दा भैसाहन लरहिया तनाईवेर नै सेकलसेमर्ना पिटना कर्बो उल्ट अत्र फे नै स्याकथुस तुही का मैं मास खाईक लाग पाल रखनु कना गरीयइना कर्बो ओस्तहेंक उ जिम्दरुवा फ उ पाँच घरक मनइं लगायत बहुत जहन अत्याचार कर्ल रह। वस्तक समय वित्ति गैल। उ अत्याचार कर्ती गैल। त दमन व अत्याचार सहत - सहत मिच्छाकन उ पाँच घरक मनई दान–दान उ जिम्दरवसे मुक्ति हुइना ड़गर खवाज लगल। वस्तक कर्ती कर्ती उ पाच घरक मनईनह गाउँक मनई सिखा देल कि बन्वाम्से उब्जाईल वाली काकर उहीह बटैया देथो आवथेसे जिन देहो नैं देना हो कैंके कल। त उ पाँच घरक मनई मौका पैल। पठरा रव्वाजवेर दिउता मिलल कहल अनुसार हुक उ जिम्दरवासे मुक्ति चाहतलह झन मनइ सिखा देल बन्वमक बालिक बटैया जिन देहो कैंक वत्रा थाहा पैल त उ बन्वा फारक बुईलक वाली उ जिमदरुवाह दिह छोरल। जब उ जिमदरवांह बटैना दिह छोरल त वाकर लम्वरी जग्गा फे ज्वात छोर देल। वाकर वेगारी कर फेन छोर देल। पाछ उ जिमदरवक घरम खैना फे नै पुग लगलस। पाछ उ जिमदरवा आपन लम्वरी बेच बेच खाइ लागल त हमार थारु समाजम जिमदारवक कत्रा अत्याचार करल बाट। त उस्तक उ पाँच घरक किसान अत्याचार सह नै सेककन उठल ओस्तहेंक हम्र थारु जाति या गरिब किसान उठल से। पक्का फे समाजस पापी मनई के हो कैंक चिन जैंने रलह।

रामकुमार चौधरी

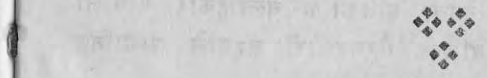

माघ संक्रान्ती २०५४ सम्पुर्ण शोषित पीडित वर्ग हुंकन अन्यायक बिरुद्धम लड्ना शक्ति दीहे कना शुभकामना ब्यक्त करती।

जिल्ला समिति
तथा
बेस परिवार बर्दिया

नै थाहाँ पइल हुइबी कलसे ?

संकलक:–सागर चौधरी
सेम्रहवा बर्दिया

१) थारु भाषाम प्रकासित पहिला पत्रिका 'गोचाली' हो याकर पहिला अंक २०२८ सालम छापगैल रह।

२) विश्वम सबसे ध्यार वर्ष सम्मन जिवित पलारलक मनैया सुनसरी जिल्लाक थारू विरनारायण चौधरी हुइत वहाँ हाल १४० बर्षक हुइल बाट।

३) एक्को नैं पहुक फे समाज सेवाम नाम चलल थारू, जन्नी मन्नैया वर्दियाक श्रीमती जगमोहनी चौधरी हुइत हाल वहा स्वास्थ्य स्वयं सेविका, बडा अध्यक्ष, बेस जिल्ला कार्यसमिति सदस्य, बेस महिला जागरण केन्द्रिय समितिक अध्यक्ष, टेलवा पत्रिका क सल्लाहकार गोचाली परिवार सल्लाहकार बाट व विभिन्न गैरसरकारी संस्थाले सम्मानित हुइल बाट।

४) अन्तर राष्ट्रिय क्षेत्रम मानवअधिकार पुरस्कार पउइया पहिला थारू बेसके अध्यक्ष श्री डौल्ली बहादुर चौधरी हुइत।

५) थारुन मध्ये सबसे पहिल मन्त्री हुउइया थारू श्री परशु नारायण चौधरी हुइत वहा २०१५ सालम शिक्षा मन्त्री हुइल रलह।

६) आपन हक अधिकारक लाग जिवन आहुति करूइया थारू जातिक पहिला शहिद स्व. गुम्ला थारू हुइत। वहा दाङ्ग क बेलवा वन्जारीमन हुइल किसान संघर्षमन जिम्दारक हातसे शहिद हुइल रलह।

७) राजनैतिक पार्टीमध्ये थारु मनै अध्यक्ष रलक पार्टी ने.क.पा. मावर्सवादी हो ज्याकर अध्यक्ष श्री प्रभु नारायण चौधरी हुइत। यि पार्टी अभिन तक संसदमन कौनो फे प्रतिनिधी पठाई नैं सेकल हो।

८) सबसे कम औपचारिक शिक्षा लेलक व विश्वके सबसे गरिब साँसद थारु साँसद हुइत वहाँ क नाउ श्री काशीराम चौधरी हुइतत् वहाँ बर्दिया क्षे. नं. ३ से जितलक हुइत।

९) हाल सम्मन एक्थो थारु महान्यायधिवक्त हुइल बाट वहाक नाउ श्री रमानन्द प्रसाद सिंह थारु हो।

१०) बहुदलीय व्यवस्था आइलमन बनल निर्वाचित सरकार मध्ये मनमोहन अधिकारी प्रधानमन्त्री रहल ब्याला कौनो फे थारुहुक मन्त्रिमण्डलमन सामेल हुइल नैं रलह।

एकताके आहवान

रच० गरिबु चौधरी
बांके बैंजापुर गा. वि. स. वड़ा नं. ३ कुम्हार

चोलो चोलो सक्कु गोचाली, एकताके आहवान करती।
थारु गोरु सक्कु जान हमनहन कथ,।
हमार हक अधिकार ह सक्कु जान लुट्ठ॥
पहिल हमार पूर्खा हुक एक्को नही पढल
उह ओसैं सक्कु जान हमन हेल्हा कर्ल॥
चोलो चोलो .... करती
थारू जाती कसिन हुइती सबसे पिछरल बाती।
अन्याय अत्याचारसे लादल हम्र बाती॥
दिन रात काम कैक खैथी आधा प्याट।
उही म फे नही पुरुक खैथी बस्या मार॥
चोलो चोलो .... करती
मनैं कलक एक्क हुइती भेद भाव कर्थं।
छुवा छुटके भावना से हमन पांछ पर्थं॥
हमार लाग सक्कु ओर अन्धकार बा।
जहोंर जाओ तहोंरे पर्दा लागल बा॥

उह बर्से –
यी सब से मुक्ति पाइकते एक जुट होइ।
अन्याय अत्याचार के पर्दा हम्र चिरी।
जाती पाती छुवा छुटके भावनाह फाकी।
शोषण दोहन खतम कर्ना काम हम्र करी॥
चोलो .... करती
आपन हक अधिकार लिह पर्ना बा।
जिम्दारनके जाल हन चिर पर्ना बा॥
पढी लिखी ज्ञानी बनी देश बनाई।
गाउँ गाउँक सुतल मनैन जगाई॥
चोलो चोलो सक्कु गोचाली, एकताके आह्वान करती

मनक बेदना नुकल बा

हमार पूर्खा दाङ्गम बैठल स्वाझ युगम स्वाझ मनै रलह दूसमन रलह मेशी टी. बी रोगक किरा बनक रलह थारुन गोरुबना-कन धरल खेतवा जोतेले भरुवा बोकेले गधा बनाक रखल। बन्वा फ़ेरेल आवाद गूलजार करैल बल्ल थारुफाँदम परली कैख़ कल निहु ख्वाज दतल। मलौं आपन घरम भातखाइस काम म्वार घरम करस कैख़ कहदतल थारु हैरान होक ज्वातल कवारल जगा छोडक द्वासर ठाउम गैल वाँहा फेन बन्वक फेला पर्ल। पूरुब मेची पछिउ माहाकाली सम थारुजाती बैठली काम कैख़ टी. बीक किरनसे चौधरी पदबी पैली।

चौधरी जात आज सम्म कहुनही पैनु चौधरी बहु जाती मन रथराणा शासनम ब्वाल सेकना थारून ल्वाह से ल्वाह कटथ वसिहक थारून थारुसे भरुवा बोकाइक लाग राणा हुंक्र चलाक थारुन चौधरी पदबी देलिन, गोली चलाक जनावर मार क शिकार खवइना मनैन सुबदार मेजर पदबी देलिन थारूजात आपन जात छोडक परजातम लगल हमार थारु जातीम स्वाँचबेर बहुंत बडाभारी रहस्य नुकल बात। चौधरी कना मुसलमान, कुर्मी, अहिर आपन टाइटिल चौधरी कैख़ लिखथ आपन जाती आ-संस्कृति हेरैना असक जमान आइल। वह वर्स म्वार बिन्ति बात की आपन भाषा व संस्कृतीह दिगो धैख आग बढैनाहो भुभाग अनुरूप थारु सस्कृति जाती थारू एक ठिक होक नेपाल देशक प्रगतीक साथ साथ थारूजातीक उत्थान कर्ना व शिक्षाकना काहो कना प्रत्यक थारु जातीम जागरण क-रैना ब वातावरण के विषयम बुझाइपर्ना नितान्त आवश्यक बात।

थारू संस्कृतिक वर्से हेर्ना हो कलसे भाषा भाषिक गित दशेक हमार दिदी, बावु गाकन नचना सखेख गित गूरबावक जलमौती, कर्नौती गितहन व बडका नाचक बडकि मारक गित ह हेर्ना हो कलसे महाभारत- रामायण, कृष्ण चरित्र १८ पर्वसे पाछ नै पर्ना लागथ भानुभक्त तुलसीदास, अन्य कवि पढक जोडलक रामायन कृष्ण चरित्र लिखल १८ पर्व ५ भाइ पाण्डव कौरव के लडाई पढक लिख़ल कलसे सखेक गित

वडकि मार गित हमार पुर्खा विना पढल एसिन गित जोडक गैल यी संस्कृती फे त भानभक्त तुलसी दाश से पाछ नै परथ।

आजकल हमार संस्कृति बिगरल थारू शिक्षित हुईल आपन मातृ भाषा बिसरैल, आपन संस्कृति छोरल, झुमरा महुते नाच छोड देन आपन भुभागक प्रकृतिह बिसरैल प्रकृतिह रूबइल पूर्खनके वात लागी सतयुग फे आई।

लौव सस्कृति म लाग लगल देश विदेशक धर्म मान लगत धनक अगाडी मन बिगरल। ग्वारा हाथ झिटकना मुरी हिल्लैना नाच नाच लगल जोकी ऐसिक कर्ना मनैन हमार पूर्खा मृगी रोग लागल मनै कहतलह गुरूवा गुरूवाबाबा, देवि देवता मान छोडल एशु धर्म म लागल गाइ भैस खाइ लगल पाप कुण्ड फनकल।

जीत बहादुर भगो-या थारु
गा०वि०स० महादेवपुरी ३ उद्दैनपुर बांके

❖

❖ धुमरु ❖

रच० जगत राम थारू (कुर्हैबा)
गा०वि०स० बैजापुर ३ कुम्भर (बांके)

धुमरु धुमरु बोल तोर बाँस बसुरीया,
आजु गुरु नाग सराइवती हो।

समरौती:- पहिल मैं सुमिरौं पंच भुइहार, हमरी मेंररियक रछिया करहो।
तो सुमिरौं मुढा महतौंक " " " "
पुरबम मैं सुमिरौं सुरज भरार " " " "
पछिव मैं सुमिरौं देवि खरता " " " "
उत्तर मैं सुमिरौं हरि कविलास " " " "
दखिन मैं सुमिरौं शिवजगान्नाथ " " " "

आकाश मैं सुमिरौं इन्द्रा चन्द्रादेव ,, ,, ,, ,,
पताल मैं सुमिरौं बासुक नाग ,, ,, ,, ,,
तो सुमिरौं मैं ईसरल बिसरल ,, ,, ,, ,,
जति देब जननु मैं नाउँ जे लिहनु ,, ,, ,, ,,
जरल पिरती मोर मदरा जे के हो, आजु गुरू नाग सरास्वी हो।
जरल पिरती मोर मदरा जे हुईत ,, ,, ,, ,,

❖ ❖❖ ❖❖❖

उत्तहे लाला हे! सावन लदीया भ-यावन रे दैया, आजुक हिन विन देव वरसे। देव बरसैं दैया देव बरसैं आजुक हिन विन देव बरसै। मन मन छन छन जियरा उदास बुढिया बिचारी मन बैराग। उतहे लाला हे। माथ कइ सेन्दुरा माग भिजल हो पिहवा भिजल परूदेश रे लाला आजुक हिन बिन देव बरसैं। देव बरसै हो, देव बरसै आजुक हिन बिन देब बरसैं।
नोट :- (अस्तहक आँखि कै कजुरा माथकै टिकुली कानक तरूना कानक झिलमिलिया नाकक नथिया घ्याचक गुरिया छातिक माला हौथक तँरीया आँगक अंगीया, पुथक लहगा, ग्वांरक चुरवा, अंगरिक भिछिया उपरक गीत अनुसार गैंना हो)।

उतहे लाला हें! केकरी ख़ोदाइल ताल पोखरीया, केकरी खोदाइ दुनु सागर रे दैया दुनहुँ ताल बिच बरे मछुरी। देखि -२ जिउ कुलपत रे दैया कौन विधि मारुँ मैं एल मछुरी। उतहे लाला हे! बापकी ख़ोदाइल ताल पोखरीया, पितीके खोदाइल दुनु सागर रे दैया, दुनहुँ ताल बिच एल मछुरी देखि -२ जीउ कुल पत रे दैया, कौन विधि मारु मैं एल मछुरी। उतहे लाला हें! जाल मरैबु मैं रैनी मछुग्यिा हेलका मरैबु मैं चन्दर बीच रे लाला दुनहु ताल बिच बरी मछुरी देखि -२ जीउ कलपत रे दैया, कौन बिधि मारू मैं एल मछुरी।

छप्या :- झिनि झिनी रे देव बरसे-बरसे गुइटा मच्छो शिरकन लागे हाँ गढक ओल्टा बकुल्या रानीं विन बिकरे आहार। हाइरे बकुल्या रानी हाइरे खर बकली रानी हाँ।

उतहे लालहे! के मोर लगेही आम अमिलिया, के मोर रे छिटैंही घनुवार के मोर रे। उतहें लाला हे! बाबा मोर लगैही आम आम अमिलिया पिती मोर रे छिटैंही घनुदार पितिमोर रे। कौन पानी छिटु आम अमिलिया कौंन पानी छिटै घनुदार कौनही पानी रे। उतहें लाला हे। केकरी चिराइल काठ कठ वेन्हवाके मोरबेन्हही घनुदार के मोररे। उतहे लाला हे! बाबा मोर चिरहीं काठ कठ बेन्हवा, पिती मोर रे बेन्हही घनुदार पिती मोर रे। उतहे लाला हे कौन पानी छिटु आम अमिलिया कौन पानी छिटु घनुदार, कौन पानी रे। सोनपानी छिटु आम अमिलिया रुप पानी छिटु घनुदार की रूप पानी रे। कांस पानी ले छिटु आम अमिलिया, ताव पानी रे छिटु घनुदार रे की तांव पानी रे। उतहें लाला हे! दिन दिन रे अमवा हुइगे समान, दिन-२ रे सुगा झाकी न झाक दिन-२ रे। आम त हुइगे रे सयान, मोर पिहा हुइगे रे तयार, (य मोर छतिया तुयँ रे मैं के जानु)-२ दिन-२ अमवा बा-हन लागे दिन-२ रे सुगा झाँकीन जाँवैं दिन दिन रे। उतहे लाला हे! फगुनी माहास अमवा मौ-हन लागे, दिन दिन रे सुगा झॉकीन जावैं दिन-२ रे। आमत लागे रे मौंर, मोर पिहा लागे रे पौंर, (य मोर छतिया तुयँ रे मैं के जानु)-२ उतहे लाला हे! दिन-२ अमवा हुइगे मसुरिया, दिन-२ रे सुगा झॉकीन जावैं दिन-२ रे। आम त हुइगे रे मसुरिया मोर पिहा हुइगे रे सुरया, (य मोर छतिया तुयँ रे मैं के जानु)-२। उतहे लाला हे! दिन-२ अमवा हुइगे, मटुरिया, दिन दिन रे सुगा झाँकीन जावैं, दिन-२ रे। आम त हुइगे रे मटुरिया, मोर पिहा हुइगे रे टटुरिया, (य मोर..........)२। उतहे लाला हे! दिन-२ अमवा हुइगे रे चनुइया, दिन-२ रे सुगा झाकीन जा, दिन दिन रे। आम त हुइगे रे चनुइया, मोर पिहा हुइगे रे तनुइया, (य मोर छतिया ....)२। उतहे। लाला हे! दिन-२ अमवा हुइगे केरुइया, दिन-२ रे। सुगा झाकीन जवे, दिन २ रे। आम त हुइगे रे केरुइया मोर पिहा हुइगे रे टकतोरुइया (य मोर..........) २। उतहे लाला हे! दिन -२ अमवा हुइगे भेलहिया, दिन-२ रे सुगा झाकीन जावे दिन २ रे। आभ त हुईगे रे

भेलुहिया, मोर पिहा हुइगे रे ठेलुहिया, (य मोर छतिया.....) २। उतहे लाला हे ! दिन २ अमवा हुइगे गदरूईया दिन २ रे सुगा झाँकीन जा दिन-२ रे। गदरूइया मोर पिहा हुइगे रे कटरूइया (य मोर .....) २। उतहे लाला हे ! दिन–२ अमवा पाकन लागे दिन-२ रे सुगा झाकी जावै दिन-२रे (आम तहुइगे रे)आम त लाक पाक, मोर पिहा लाग ताक(य मोर.....) २। उतहे लाला हे। दिन- २ अमवां चुहन लाग दिन दिन रे सुगा झाँकीन जा दिन २ रे। आम त लागे रे चुहे पिहा लागे रे तोय (य मो..... २

छप्या:- अमलिक पाता पटरिया रे उपर झिनवक भात खाव विदेशी लोच बालमरे दैया, आजु पन्थु पाहुनरे।

❖ ❖❖ ❖❖❖

उतहे लाला- हे! उरी उरी भौरा मंगिया पर बैठ मगीया पकरी रस लैगे रे लाला तो पन्थु हे तो पनीहर तरपट भौरा लोभीन रहे। उतहे लाला हें ! उरी - २ भौंरा सेन्दूरवा पर बै सेन्दूरा पकरी रस लैगे रे लाला तो पन्थु तो हार पनीहार तरपन भौरा लोभीन रहे।

नोट:-(अस्तकहँक माथक टिकुली, आँखीक काजल कानक तरुना कानक झिलमिलीया नाकक नथिया, घ्याचक गुरिया, छातीक माला , हाथक तरीया आँगक अँगीया, पुथक लहँगा, ग्वारक चुरवा, घुथ्थीक पैंरी, अंगरिक भिछिया सक्कु गहना उपरक गीत अनुसार गैना हो।

❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖❖❖

उतहें लालाहें! भितर घुमी घुमी रुइलागल धनी मोर, भितर छिरके दुबदानरे लाला , मैं सतीहारी बोलाइ जैंबुरे । मैं सतीहारी बोलाइ जैंबुरे लाला मैं सतीहारी लैजैंबु ।

नोट:- (अस्तहुंक, पि-यारी, मझयारी धेक्वारी, बहरी, अगना सक्कु उपरक गति अनुसार गैना हो।)

❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖❖❖

उतहें लालाहो ! अधिरात मोर सेंदुरा गइल हो, निन्दा छुटल भिन्सार रे लाला , इह निदीया मोर वैरी भए। घस मस धरती सेन्–

दुरा मोर छुट, निन्द्रा छुटल भिनसार रे दैया, इह निदीया मोर वैरी भय।

नोट:– (अस्तहेक आँगक सक्कु गहना उप्परक गीत अनुसार गैना हो)।

❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖❖❖

छप्या :– कांध फरूवा, मुरे ढुँगा. चली भैंल लौंरा खेत किनार, आ त भैया लौरा बिली बिला तुम्म मुसे ढुङ्गार, सुसवा मुअटँगरी पसार छेगरहुवा बर्दिया हुइल खुशी, उरगैल रे तितरा मन्जोर। देव-२ सासु कोदार रे केहिया बुयैबु मेठी साग लौरग। यीह लेव पतोहीया कोदरा रे, केविता बुदैबु मेथी साग लौरंग। यीह लेब पतोहिया कोदार रे दुमना बुयैहो मेठी साग। सोयौ मैंठी साग लौरंगेर । देव-२ सासु हाँसिया रे जेहिले कटैबु मेठी साग सोयौ मेठी साग लौरंगेर। देव–२ सासु ढकिया रे जेहिया धरैबु मेंथी साग सोयौ मेठी साग लौगेररे

❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖❖❖

छैला नाचनियक माग भर सेन्दुरा. छायी रहें, छैमासक रे छैला नचनिया झुमि रहें।

नोट (अस्तहेक माथक टिकुली, आँखीक काजुला धेचकइ गुरीया जत्रा गहना वा उपरक गीत अनुसार गैना हो)

★

★ रुपक प्रेम प्रतिज्ञा ★

लेखक:- जग्गु प्रसांद चौधरी
बर्दिया

फाल्गुन के महिना वसन्त ऋतु हुइलक ओर्से नाधेर घाम अर्थात जार ओ घामक सगम समय हुईलक ओ किसानन् के घरम अन्नपात भिल्या

स्याकल समयक कारण तथा किसानन तनिक फुर्सद फे हुईना समय हुईलक ओर्सें हुई शायद हमार थारु समाज म बेरसेम्वाज (शुभ विवाह) यीह महिनम हुईथ ओ मानव साँस्कृति अनुसार दम्पत्ति सुत्रम बाँध के लवण्डा वा लवण्डीक पारिवारिक जीवन यात्रा शुरु हुइथ जौन यात्रा जीबन के अन्तिम घडि सम पल रहथ ।

आज फाल्गुण ९ गते भ्वाजक लगुन जुरल हुइलक ओर्सें महतावक छोटकी छाई रूपा कुमारीक भ्वाज हुईता । भ्वाज हुईलक ओर्सें आज महतान घर बरा झकी झकाउ सिगारल वा । मनें धेर जम्मा हुइलक ओर्सें वरा चैनार लागता घर भित्तर से लेक अंगना सम बहुत चहल पहल बा । अगुनक प्रवेशद्वारम दुनु वर क्यारा वा बाँस गारल बा व उह क्यारा बाँसम स्वागतम 'शुभ विवाह' लिखल लाल तुल टंगाइल बा । रंगी चंगी कागज लेक स्वागतम के शोभा आकुर आकर्षित बना देल बा दुनु ओर गारल रलक क्यारक खम्बाम अगरबत्ती सुँगाक गारल रलक ओर्सें अगरबतीक सुगन्ध मग मगाईल बा ।

प्रवेशद्वार के दुनु ओर तामक गगरम कलश धरल देख परता कलश के उप्पर फूलक माला चढाईल वा अंगनम फे रंगीचंगी अर्थात लाल पियर कागज के बिच-बिचम फूलक माला ढेलवा ख्याल जसिन देख परता । घरक मूल दुवारीक सामने जगीया सजाईल बा । जगीयम पूजा पाठ कैक कन्यादान देना विधिअनुसार भ्वाज करादिहक लाग पण्डित भक्ति उपाध्यायहन बलैलक ओर्सें उ के आपन पूजा-पाठ करनी पुस्तक लेक महतावक घर हाजिर हो रहल ।

महतावा धनी किसान हुइलक ओर्सें कौनो चिजके कमी नें हुइतस । कन्यादान के साथम आपन छाइ वा दमदबहन दिहक लाग कुर्सी, दराज बाकस, रेडियो, साईकिल, घड़ि, पलंग, भांडाकुंडा सब तकम तयार बातिस । निउता दिहल अनुसार के भ्वाज खवैया इष्टमित्र, पहुना पाछर जुटल बाट । पहुना अनुसार के खानपिन के कौनो कमी नें हो । आपन संस्कार अनुसार पहुना पछारन के लाग मद्यपान के व्यवस्था कर्लक ओर्सें

पहुना पाछर हुंक मद्य सेवन कैक आपन मस्तीम बाट । गाउंक सुरहवा हुंक आपन फाँटल अनुसार के काममं लागल बाट । भन्सरीया हुकन खाना रिझैना व पहुना पाछरन हेर्ना काम से फुर्सद नें हो ।

आपन ज्ञानल अनुसार के मागर गा के सब ज्ञान खुशीयाली मनाइत । दुलहिक गोही हुंक आपन गोही (दुलही) हन सप्रैना काममं लागल बाट । हैरे भित्तर भर भन्सरीयन बाट कोष्टीभर भितोरियन बाट बहरिम ऐले रे परदेशी लोग कुइ नही याद कर्लो । अस्तहंक विभिन्न किसिम के मागर के मगलमय ध्वनि गुञ्जल बा ।

जान परता सक्कुजानयी समयम खुशी के कारण से गदगद बाट । दुलहिक बाबा झन बहुत हर्षित देख परता काकर कि आपन जसिन सम्पन्न घरानम छाईदिह पैलक ओर्सें आपन स्वाँचल काम पूरा हुंइना हुइल कैक ऊ निर्धक्क रह । तर ओत्रा धेर खुशीयाली मनैना अनुहार के बिचम बिचारी ज्याकर भ्वाज हुइता वाकर भित्री आत्मा रुइता काकर कि एक त बिचारी आपन जर्मल घर छुटना, दाई बाबा छुटना, आपन जन्म के छोटी से बर सम संग खेल्लक दादु भैया आपन गाउं गवलिया गोही छुट त द्वार ओर आपन हृदय के प्यारा दिउता जसिन आपन आत्माले-बाजल वभिष्यक जीवन मित्रसे बिछोड हुइना जसिन हो गैल बातिस । काकर कि रुपा आपन गाउक एक्यो गरीब परिवार के युवक निर्मल से आपन जीवन यात्रा जीवनके अन्तिम घडीसम्म वितैना प्रतिज्ञा कैं स्याकल रह । तर आपन बाबा धनबीर के कारण से आज रुपा बाँदम बाझल जसिन हो गैल बा ।

बिचारी रूपा आपन प्रतिज्ञा भंग हुइ भिरल देखके बिचारी बहुत निरास देख परता रुपा आपन हृदयम जब फे निर्मलहन देख्था आँखी तुमलसे फे उह निर्मलके रूप आपन आँखीम द्याखता रूपा ।

उहँर निर्मल बिचारा आपन धरक आर्थिक अवस्था कमजोर हुईलक कारणसे गाउँक स्कूलम एस० एल० सी० सम्मके शिक्षा प्राप्त कैके

स्याकल त आपन घरसे द्वासर जिल्लाम जा के एक्थो स्कूलम प्राइमरी स्तरम अस्थायी शिक्षाकम जागीर ख़ाइता। रूपा ओ निर्मलके सल्लाह अनुसार स्थायी जागीर हुइलसे तब दम्पत्ति जीवन शुरू कर्ना रलहिन आपन दम्पत्ति जीवन यात्राम दुर्घटना हुइना देखलक ओसँ रुपा आपन आत्मा के पतिहन सात दिन पहिलेह चिठ्ठी लिख़थ -

"प्रिय निर्मल अतुट प्यार "

मै जालम फँस गैनु आब मै जालसे निक्र नै स्याकथूं यदि तुँ महिहन आत्मासे प्यार कर्थों कलसे, यदि म्वार आत्मा हन आपन आत्मासे मिलन हुई चहथो कलसे यी चिठ्ठी पैतीकी तुरून्त यीहाँ आव म्वार म्वाज फालगुन ९ गते हुइकलाग बा तर म्वार जीवनसे खेलवार कर्थों कलसे मै आब यी संसारसे बिदा लिहक लाग बाटु।

उह तुहार रुपा, जन्तीहुकन स्वागत करक लाग गाउँक पहुनापाछर हुँक, इस्टमित्र जान महतान अँगनम अनेक किसिमके माङ्गर गाइल बाट। महतावा जुन कब्बो अँगना त कब्बो घर मित्तर नेगतो बा, आपन छाइक म्वाज सुसम्पन कर्ना काममा लागत बा। जगीयक चार चार कोन्चम दिया बरल बा। अँगनम अजरार करक लाग मैन्टोलके फे व्यवस्था करल बा। कुछ समय सम त महतावा बरा अजरार अनुहार लेक न्यागतह तर जब रातीक करीब दश बजना समय सम फे जन्ती ऐना कौनो संकेत नै देखा परवेर महतावक अनुहार तनिक मलिन हो गैलीस। आपन गाउँक सुरहवन जन्ती ऐना डगरीम दूरसम जन्तीनके बत्या हयार पठाइल। तर जन्तीनके कौनो शब्द नै सुन मिलल। रातीक साढे दश बजेवेर फे जन्ती नै ऐल आब महतावक छटपटी पर्लिस। एकघची रहके हुइथो मनै रसरस महतावक अँगनम आइत देख पर्ल त महतावा स्वाचल सायद हिक्रजन्ती आइत कहके खबर दिह आइल हुइही। तर खबर त उल्टा रह काकरकि दुलाहा खबर पठाइल "यदि मोटर साइकिल दैजाहा देबो कलसे तुनहक छाइसे म्वाज करम नै त नैकरम काकर कि मोटर साइकिल दैजाहा मिल्ना दुलहीं और ठाउँ भेटा रखु

अत्रा वात सुन बेर महतावाहन पहाडके छाँगामसे ख़स असक लमीस काकरकि और सब चीजके व्यवस्था कर्ल रह तर मोटरसाइकिलके व्यवस्था नै कर्ल रह। आब महतावा गालम हाथ धैक स्वाँच भिरल "यदि मैं कौनो जुगारसे मोटरसाइल व्यवस्था त करम तर पाछ जीप, मोटर दैजाहा माग भिर्लसे कसिक करम आदि सब स्वाँचत - २ सारा रात बितगैल कौनो निस्कर्ष नै निक्र स्याकल। आब महतावक गगरीम वल्ल घाम लग्लीस कि धनी धरम बेत्या दिहवेर दुलाहा कत्ता स्वार्थी रथ कत्ता बात।

उहँर हुलाक के लापर्वाही कना हो कि दुर्गम ठाउँक कारण से कना कना हो रूपाके पठैलक चिठ्ठी निर्नलके हाथम समय भितर पुगनै स्याकल। जौन दिन रूपाके म्वाज (स्वयम्वर) हुंइना रह उह दिन संध्याक तिर्मल के हाथम चिठ्ठी पुगल।

चिठ्ठी पह्लवेर आपन भविष्यके प्राण प्यारी पत्नीक व स्वयम आपन जीवनहन फे आकाशसे खस असक लग्लिस। माया प्रेम व दुःख के बेगहन थाम नै सेकके आँखीमसे आँस गीर लग्लीस केवल ऊ आवज केल निक्राए नै स्याकल। समय संध्या रात पर्ना जुन हुइलक ओसँ निर्मल आपन जसिक तसिक रात बिताइल ओ बिहानके विद्यालयम आपन घरसे बहुत जरूरी खबर ऐलक चिठ्ठी पठाके बिदा लिहल। उहाँसे निर्मल हन घर पुगत रात हो गैलरह। जब ऊ घर पुगल त रूपाके म्वाज स्थगित हुइलक कारण थाहाँ पाइल ओ रूपाके दुःखी बात सुनके वहीहन हृदयु भित्तर बहुत दुःख लग्लीलस। दिनभरीक भुखाइल पियासल निर्मल आपम द्वारम रात भर नीद नै पर्लिस तर फे घरम जौन खाना बनल रलहिस आपन दाइक स्नेही हाथसे दिहल खाना खाईल ओ कुछ घ ी आपन दाई बाबा से सुख ओ दुःखके बायचीत कैके रुपाके घरओर प्रस्थान करल।

उहँर रूपाहन का थाहा कि दुरीक खबर सायद समय भित्तर पुग नै स्याकल हुइ क़ैक। फाँदम बाझल चिरै जसिक छटपटैथ लोस्तहक रूपाहन फे छटपटी पर्लक ओसँ रुपां आपन निर्मलके दर्शन

पँनाम आतुर रह। फाल्गुन ६ गतेसे १० गते सम्म रूपा निर्मल के बत्या ह्यारल तर १० गते सम्झया सम फे निर्मल ऐलक कौनो संकेत नैं पैलक ओर्से आब रुपा आपन जीवनसे खिन्न हो गैल ओ आपन भौतिक शरीर हन आज रातिक कनिदियक समयम यी संसारसे मुक्त करैना यो-जना बना स्याकल रह काकर कि "निर्मल महीहन धोखा देल, म्वार जीवनसे खेलवाड कर्लं उह ओर्से आब यी संसारमा बच्ना म्वार कौनो आधार नैं हो" कना विचार रुपाके आत्मा भितर प्रवेश कैं स्याकल रह।

करीब आधारात हो स्याकल रहल हुई सायद काकर कि गाउक सक्कु मनै निद्रा दैविक काखम (विश्राम) बास ले स्याकल रलह। निर्मल रुपाके घर ओर सुप्त-२ जैती रह, उह समयम रूपाके घर ओर्से एक्थो मानव रूपी आकृतिहन निर्मल आपन ओर आईत द्याखल। यी मानव रुपी आकृति वास्तवम मानव हो कि नैं हो? कैंक बाकर निरिक्षण कर क लाग डगरीक पञ्ज्र तनिक नुकाहुर ठाउँम नुक गैल। मानव रुपी आकृति हन झन ओक्र ओर आई भिर्लस। ऊ मानव आकृति सुनसान गल्लीम अकल्हे गाउक उत्तर ओर पिपरक रूखर ओर जाई तह। जब निर्मलके एकदम लग्ग ऊ मानव आकृति पुगल त निर्मल द्याखल बाकर हाँथम एक्थो बलगर नम्मा दौरी लेलह बा, अकृति प्रस्त रूपम एक जवान सुन्दर युवति हो ज्याकर खोजीम निर्मल ऊ ठाउम आईल रह। अ-सिक प्रस्त रुपम चिन्हके फे ऊ युवक के मुहसे कौनो शब्द निक्र नैं स्याकल। युवक (निर्मल) आब मानव रूपी आकृतिक पाछ पाछ नुकत छिपत न्याग भिरल जब उ आकृति पिपरक रूखवतर पुगल त यीहँर उहँर चारी कोन चौगिर्दा ह्यारल ओ कह भिरल– "हे पिपरा मैं ज्याकर माया प्रेम लेक यीं संसारम बाच चाहल रनहु उ म्वार जीवन सेखेलबार करल महिहन धोखा दिहल, आब मैं यी संसारसे बिदा लिह चाहतुँ उह ओर्से तुहार शरणम आइल बातुँ आब महि यी संसारसे बिदा लेना कामम मदत करो।"

अन्ना कहके जब ऊ मानवरुपी आकृति दौरी लेक पिपरक रूखवम च्यूह्रक लाग एक्थो ग्वारा उप्पर उठाके पिपरक रूखवक जरीम

धरल कि उहँर से निर्मल एकाएक आकृति क पाछसे जाके पक्रल ओ कहल– "रूपा...... तुँ काकरतो असिन? मैं तुहँर विना यी संसारम नैं रह सेकम। मैं तुहिन का धोखा देनु तुँ यी संसारसे भागतो अन्ना कहवेर सूनसान ठाउम एकाएक आपन नाँउ पुकारत सुनके ओ आपन जीउ पक्रावा पाएबेर रुपाके होस हेरा गैलीस। "महीहन छोरदेब मैं यी संसारसे खिन्न हो रनु" अन्ना बातकेल रुपाके मुहसे निक्र। कुछ घरी रहके जब रुपा ठीक होसम आइल त थाहा पाईल की बाकर कोमल शरीरहन निर्मलके मायालु हाथले थम्हल बा कना। माया प्रेमके कारणसे आँस हुनु जनहनके आँख से गिर लागल। आज यी दुई दुःखी प्राणीन के पुनर्मिलन हुइल। एक घड़ी आपन दुःख ओ सुखके बातचित कर्ल औं जीवन भर दम्पत्ति जीवन वितैना प्रतिज्ञा कैंक निर्मलके घर ओर लग्ल। आब हुकनके दम्पत्ति जिवन मजासे बितता।

❖अस्तु❖

गोचालीहन सहयोग दिहुइयन चन्दादाता हुकनके नामावली :-

क्र. स.	नाम थर	जिल्ला	गा वि स	वडा न.	गाउं	सहयोग रकम
१	श्री जीत बहादुर चौधरी	बाँके	बैजापुर	३	कुम्हर	३०३/-
२	,, सगुन लाल चौधरी	बर्दिया	धधबार	९	सेम्रहवा	१५५/-
३	,, मघौता नाच	बाँके	बैजापुर	३	कुम्हर	१४०/-
४	,, डिल्ली बहादुर चौधरी	दाङ्ग	तुल्सीपुर		डुम्रीगाउं	१०२/-
५	,, सीताराम चौधरी	बाँके	बैजापुर	९	धामपुर	१०२/-
६	,, हरिराम ,,	बाँके	,,	९	,,	१०१/-
७	,, विष्णु प्रसाद चौधरी	,,	बिनौना	६	बिनौना	१०१/-
८	,, मान बहादुर ,,	सुर्खेत	लाटीकोइली	९	बुदबुदी	१०१/-
९	,, दिल बहादुर ,,	बर्दिया	धधबार	७	दुद्धा थानफेना	१०१/-
१०	श्रीमति गेन्द कु० चौ०	बर्दिया	,,	९	सोम्रहवा	१५/-
११	,, भिम बहादुर ,,	,,	,,	३	कटनिया	५५/-
१२	,, बन्धुराम ,,	बाँके	बैजापुर	९	लालपुर	५१/-
१३	,, घोंघा ,,	,,	बिनौना	९	गोरधोइया	५०/-
१४	,, जितराम ,,	बर्दिया	धधबार	८	कचकहवा	४५/-
१५	,, भागीराम ,,	बाँके	बैजापुर	५	बनघुस्री	४०/-
१६	,, सुन्दरलाल ब्रह्मचारी	,,	,,	३	कुम्हर	३१/-
१७	,, जग्गु प्रसाद चौधरी	बर्दिया	धधबार	९	बैदी	३५/-
१८	,, जुठे ,,	बाँके	बैजापुर	९	लालपुर	३२/-
१९	सुश्री कुसुम कु. वि.क.	,,	,,	३	कुम्हर	३१/-
२०	,, खुशी राम चौधरी	,,	,,	३	,,	३१/-
२१	,, देविराम ,,	सुर्खेत	लाटीकोईली	९	पदमपुर	२६/-
२२	,, पतिराम ,,	बर्दिया	धधबार	२	बैदी	२५/-
२३	,, शिवलाल ,,	,,	,,	२	,,	२५/-
२४	,, भाषण ,,	बाँके	बैजापुर	३	कुम्हर	२५/-
२५	,, जय नारायण योगी ,,	,,	,,	३	,,	२५/-
२६	,, कृष्ण प्रसाद चौधरी	सुर्खेत	लाटीकोइली	८	तिलपुर	२५/-

क्र. स.	नाम थर	जिल्ला	गा वि स	वा न.	गाउं	स० रकम
२७	श्री लक्ष्मण चौधरी	सुर्खेत	लाटीकोईली	८	कालीमाटी	२५/-
२८	,, कुकरा थारू	सुर्खेत	,,	९	कोनैठी	२५/-
२९	,, टेक बहादुर चौधरी	,,	उत्तरगंगा	५	ठाँरी	२५/-
३०	,, करिगा प्रसाद ,,	बाँके	बिनौना	३	लल्ही	२१/-
३१	,, बाँठु चौधरी (कुम्हार)	,,	बैजापुर	३	रासपुर	२१/-
३२	,, धुन्ना ,,	,,	,,	३	,,	२१/-
३३	,, कल्लु ,,	,,	,,	३	,,	२१/-
३४	,, बुद्धिराम ,,	,,	,,	३	,,	२१/-
३५	,, पुनिराम ,,	,,	,,	३	,,	२१/-
३६	,, बाहू ,,	,,	,,	३	,,	२१/-
३७	,, तिलकराम ,,	,,	,,	३	कुम्हर	२१/-
३८	श्रीमति मेंनुकला भण्डारी	,,	,,	३	,,	२१/-
३९	श्री खुशीराम चौधरी हरनहवा कुसुम्या	,,	,,	३	,,	२१/-
४०	,, लौटन राम चौधरी	बर्दिया	धधबार	१	धधबार	२०/-
४१	,, कर्ण बहादुर ,,	,,	,,	८	फचकहवा	२०/-
४२	,, लम्मण ,,	,,	,,	९	मेरैया	२०/-
४३	,, हरिराम ,,	बाँके	बैजापुर	३	कुम्भर	२०/-
४४	,, प्रेम ब० थापा मगर	सुर्खेत	उत्तरगंगा	५	ठाँरी	२०/-
४५	,, थिर बहादुर ,, मगर	,,	,,	५	,,	२०/-
४६	,, दिल बहादुर चौधरी	,,	विरेन्द्र नगर न० पालिका	९	नौलापुर	२०/-
४७	,, पाण्डे चौधरी कुम्हार	बाँके	बैजापुर	३	रासपुर	१९/-
४८	,, जोखन राम चौधरी	कैलाली	हसुलिया	५	खोनपुर	२५/-

सि. न.	नाम थर	जि. स.	रकम	सि. न.	नाम थर	जि. स.	रकम
४९	श्री केन्द्र बहादुर चौधरी	१५/	५०	श्री रुन्चे चौधरी	बर्दिया	१५/	
५१	,, किशोर कु ,,	११/	५२	,, राम प्र. ,,	,,	१५/	

५३	,, लक्ष्मी ना. ठाकुर	१०/	५४	,, फकलु रा. ,,	,,	१०/
५५	,, तुलसी प्र. अधिकारी	११/	५६	,, नारायण थारु	,,	१०/
५७	,, दिवाकर चौधरी	१०/	५८	,, कालुराम चौधरी	,,	१०/
५९	,, लाल बहादुर थारु	१०/	६०	,, पंचराम ,,	,,	१५/
६१	,, काली ,, चौधरी	१०/	६२	,, चिजमान ,,	,,	७/
६३	,, खुशीराम ,,	१०/	६४	,, बोधी प्र० ,,	,,	१०/
६५	,, तीलक बहादुर ,,	१५/	६६	,, भवन ,,	,,	१५/
६७	,, झग ,, ,,	५/	६८	,, क्षेत्र ब० ,,	,,	५/
६९	,, बुधराम ,, ,,	१०/	७०	,, राम केवल ,,	बाँके	११।
७१	,, लोहारी ,,	११/	७२	,, मान ब० बली ,,		५/
७३	,, जीत ब० थारू	११/	७४	,, मायाराम चौ० ,,		१०/
७५	,, बेद प्र. भण्डारी	१६/	७६	,, डाँके चौ. कुम्हार ,,		१२/
७७	,, अनन्त ,,	११/	७८	,, कालुराम चौधरी ,,		१५/
७९	,, पृथुराम चौधरी	११/	८०	,, चिल्लुराम ,,	,,	११/
८१	,, हीमलाल ,,	१६/	८२	,, धनीराम ,,	,,	१०/
८३	,, राम ब० रावत	११/	८४	,, मेघराज ,,	,,	१०/
८५	,, हीरामणी चौधरी	५/	८६	,, मन बहादुर,,	,,	५/
८७	,, जागुराम ,,	१५/	८८	,, चुल्हुवा ,,	सुर्खेत	१५/
८९	,, कुकाराम ,,	१०/	९०	,, शेर ब० ,,	,,	१०/
९१	,, बम बहादुर ,,	१०/	९२	,, बिन्दु ,,	,,	५/
९३	,, कालीचरण ,,	५/	९४	,, बुझीराम ,,	,,	५/
९५	,, गंगाराम ,,	५/	९६	,, ललित ,,	,,	५/
९७	,, रघुबीर ,,	५/	९८	,, अमृता ,,	,,	५/
९९	,, ललित ब० ,,	५/	१००	,, बुद्धिराम ,,	,,	१५/
१०१	,, जगतराम ,,	५/	१०२	,, रेशमल ,,	,,	५/
१०३	,, चनक लाल,,	१५/	१०४	,, बीर ब० ,,	,,	५/
१०५	,, गगाराम ,,	५/	१०६	,, भागीराम ,,	,,	५/
१०७	,, राजु ,,	५/	१०८	,, दिलाराम ,,	,,	५/
१०९	,, टीकाजंग सिंह	१००/	११०	,, प्रतिभा पु० प० ,,		५१

थारु जातिनक बर्का तिह्वार माघ सक्रान्तीक उपलक्ष्यम सम्पूर्ण शोषित पीडित हुंकन अन्यायक विरूद्ध म् लड्ना शक्ती ल्यान दिहकना शुभ-कामना व्यक्त करती।

शान्ती फुड प्रोडक्टस प्रा.लि.

त्रि.न.न.पा. ११ घोराही, दाङ्ग

फोन न० ६००६२

यहां शुद्ध तोरीको तेल र चामल सुपथ मूल्यमा उपलब्ध छ ।